दिगन्तर

न्याय और समानता के लिए शिक्षा

वार्षिक प्रतिवेदन

2020-21

दिगन्तर

वार्षिक प्रतिवेदन : 2020–21

लेखन

हेमन्त शर्मा

कम्पोजिंग

राजू गुर्जर

कम्प्यूटर ले–आऊट

ख्यालीराम स्वामी

निर्देशन

रीना दास

© दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर

संपर्क

दिगन्तर

शिक्षा एवं खेलकूद समिति

टोडी रमजानीपुरा, खोह नागोरियान रोड

जगतपुरा, जयपुर–302017 राजस्थान

अनुक्रम

1.	पृष्ठभूमि	5
2.	हमारा शैक्षिक दर्शन	7
3.	दिगन्तर विद्यालय	9
3.1	दिगन्तर विद्यालयों की विशेषताएं	9
3.2	वर्तमान में बच्चों व शिक्षकों का विवरण	10
3.3	कोविड–19 : प्रथम चरण की शैक्षिक गतिविधियां	11
3.4	कोविड–19 : द्वितीय चरण की शैक्षिक गतिविधियां	21
3.5	कम्प्यूटर शिक्षण	22
3.6	कारपेन्ट्री शिक्षण	22
3.7	पुस्तकालय शिक्षण	23
3.8	विद्यालय में विभिन्न बैठकें	24
3.9	अकादमिक कार्यशालाएं	26
3.10	बच्चों की शैक्षिक प्रगति रपट	29
3.11	समुदाय के साथ संवाद	30
3.12	कार्मिकों का साक्षात्कार एवं चयन	30
3.13	बच्चों की पत्रिका 'बातूनी'	30
3.14	राष्ट्रीय पर्व	31
3.15	अन्य संस्थाओं के साथ संवाद	32
3.16	ऑनलाइन दस्तावेजीकरण	33
3.17	कोरोना काल में सहयोग / मदद	34

3.18 उपब्धियां 36

3.19 निर्माण संबंधी कार्य 37

3.20 चुनौतियां या समस्याएं 37

3.21 आगामी योजना एवं लक्ष्य 38

4. **शिक्षा विमर्श** **39**

4.1 पत्रिका की पहुँच और योगदान 40

4.2 प्रचार–प्रसार और सदस्यता 40

4.3 विमर्श टीम द्वारा स्कूल कार्यक्रम मे सहयोग 41

4.4 समस्याएं एवं चुनौतियाँ 41

5. **संदर्भ सहायता इकाई** **43**

5.1 लेखा एवं वित्तीय प्रबंधन 43

5.2 स्टोर प्रबंधन 43

5.3 पुस्तकालय संचालन 44

5.4 कैम्पस सुरक्षा व मैस व्यवस्था 44

5.5 अन्य गतिविधियां 44

5.6 चुनौतियां एवं समस्याएं 44

6. **अकादमिक संदर्भ इकाई** **46**

6.1 अकादमिक गतिविधियां 46

❑❑❑

1. पृष्ठभूमि

दिगन्तर शब्द का अर्थ है दिक + अंतर या दिशा + परिवर्तन यानी धारणा/दिशा में परिवर्तन को दर्शाना है।

दिगन्तर को शुरुआत में एक स्थानीय व्यवसायिक (अनोखी प्राइवेट लिमिटेड के जॉन और फेथ सिंह) दंपति द्वारा निजी तौर पर वित्त पोषित किया गया था, जो तात्कालीन शैक्षिक परिदृश्य से बहुत संतुष्ट नहीं थे और अपने बच्चों के लिए शिक्षा के प्रति अधिक ''वास्तविक'' दृष्टिकोण चाहते थे। वे एक ऐसा स्कूल चाहते थे जहाँ बच्चे अपनी गति से सीख सकें और जहां शिक्षा का अर्थ शिक्षा का सही अर्थों में होना हो, न कि केवल एक प्रक्रिया जिसे जीवन में कुछ डिग्रीयाँ प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

इस दंपति को कर्नाटक के नील बाग गांव में एक अनोखा स्कूल मिला, जिसे ब्रिटिश शिक्षाविद् डेविड ऑसबरा चलाते थे। डेविड द्वारा संचालित नील बाग स्कूल बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि इस दंपति को छोटे बदलाव के अलावा तलाश थी। डेविड ने दंपति से कहा कि यदि वे स्थानीय स्तर पर स्कूल शुरू करना चाहते हैं तो वे उनके शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकते हैं। इस प्रकार दिगन्तर की कल्पना की गई थी। दिगन्तर का नाम इसके दो शिक्षकों, प्रोफेसर रोहित धनकर और रीना दास द्वारा गढ़ा गया था, जिन्होंने डेविड ऑसबरा से प्रशिक्षण लिया और वैकल्पिक शिक्षा के लिए इस विद्यालय की शुरुआत की। लगभग एक दशक तक इस स्कूल ने दंपति और डेविड द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सहायता की मदद से काम किया। तब तक इस स्कूल में विभिन्न आयु वर्ग के लगभग 24 बच्चे अध्ययनरत थे।

इस एक दशक के दौरान शिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांतों और व्यावहारिक पहलुओं को समझने और अध्ययन करने का पर्याप्त अवसर मिला। उन्होंने स्कूल में काम करने के साथ–साथ शिक्षा का अर्थ और समाज में इसकी प्रासंगिकता को समझने का काफी प्रयास किया। इस प्रयास से कई लोगों और संगठनों के साथ उनका संवाद शुरू हुआ जो शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रहे थे। इस प्रकार धीरे–धीरे स्कूल के संस्थापक विचारों में शामिल होकर प्राथमिक शिक्षा के लिए और अधिक स्वस्थ दृष्टिकोण ने आकार लेना शुरू कर दिया था।

सन् 1986 में दिगन्तर ने वित्त पोषण के लिए किसी व्यक्ति या परिवार पर निर्भर होने के बजाय इस स्कूल को चलाने वाले एक स्वतंत्र संगठन की आवश्यकता महसूस की और दिगन्तर स्कूल को ग्रामीण क्षेत्र में चलाने का निर्णय लिया गया ताकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित बच्चों को इसका लाभ मिल सके। व्यापक विचार–विमर्श के बाद दिगन्तर ने एक संगठन का रूप लिया और सन् 1987 में राजस्थान सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 के अंतर्गत एक गैर लाभकारी स्वयंसेवी संस्था ''दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति'' के नाम से पंजीकृत करवाया गया। इसके बाद जयपुर के दक्षिण–पूर्वी कोने में

गांवों और बस्तियों को अपने शैक्षिक कामकाज के क्षेत्र और कर्मभूमि के रूप में चुना और इसके व्यवस्थित संचालन के लिए दिगन्तर का मुख्य परिसर श्री जॉन सिंह द्वारा दान में दिया गया।

वर्तमान में दिगन्तर द्वारा जयुपर के भावगढ़ बंध्या और खोरेबारियन गांव स्थित दो स्कूल संचालित हैं। दिगन्तर के पास मजबूत और अनुभवी अकादमिक टीम भी है, जिसका कार्य क्षेत्र विशाल रहा है जिसमें कई मौलिक मुद्दों, अकादमिक शोध, शिक्षक प्रशिक्षण, अकादमिक कार्यशालाएं, शिक्षण सामग्री विकसित करना आदि शामिल हैं। वर्तमान में दिगन्तर विद्यालय, शिक्षा विमर्श और फाउण्डेशन ऑफ एज्युकेशन दिगन्तर की तीन परियोजनाएं संचालित हैं जो शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर काम कर रही हैं।

संस्था के तौर पर दिगन्तर के मुख्य उद्देश्य

- शैक्षिक चिंतन एवं शैक्षिक विचारों को व्यवहारिक धरातल पर परखना।
- शैक्षिक चिन्तन के अनुरूप उपयुक्त शिक्षण विधियों और शिक्षण सामग्री का विकास करना।
- शिक्षा से संबंधित शोध कार्यों को प्रोत्साहन देना।
- शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों तथा संस्थाओं को शैक्षिक मदद मुहैया कराना।
- सांस्कृतिक उन्नयन तथा सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करना।

❑❑❑

2. हमारा शैक्षिक दर्शन

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य तर्कसंगत स्वायत्तता, संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक और समतावादी मूल्यों, श्रम की गरिमा व कौशलों का विकास करना होना चाहिए। हमारा मानना है कि प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को स्वप्रेरित और स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाना है। क्योंकि प्रत्येक मानव बच्चा समाज में रहना सीखने, जीवन के लिए अपने लक्ष्यों को परिभाषित करने, चुने हुए लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके खोजने, उचित कार्य करने और किए गए कार्यों के लिए जिम्मेदार होने में सक्षम है। एक लोकतांत्रिक समाज में प्रत्येक मनुष्य को अपने लिए निर्णय लेने का अधिकार है और वह अपने निर्णयों के लिए जिम्मेदार होने के लिए बाध्य है। जब कोई समाज समानता की इस बुनियादी धारणा को नकारता है तो उस समाज में शोषण तथा उत्पीड़न अलग–अलग तरीकों से स्वीकार्य हो जाते हैं। और ऐसे समाज में सामुहिक सहयोग के लाभों का बंटवारा एवं सामाजिक वस्तुओं के वितरण के तंत्र पर नियंत्रण कुछेक के पक्ष में झुक जाता है। इसलिए समाज के प्रत्येक सदस्य की तर्कसंगत स्वायत्तता का विकास शायद न्याय सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका है। लोगों को स्वायत्त और विवेकवान बनने में मदद करने के लिए अच्छी शिक्षा ही एक मात्र रास्ता है।

दुनिया के सभी जीवों के प्रति संवेदनशीलता हमारे विवेकसंगत स्वायत्तता का एक अभिन्न हिस्सा है। जिस प्रकार मानव जीवन समाज में ही संभव है। इसी तरह जीवन में जटिल व पारस्परिक विभिन्न रूपों को बनाए रखना केवल इंसानी जीवन में ही सम्भव है। ऐसे में मनुष्य के लिए सभी प्राणियों के प्रति संवेदनशील और सम्मानजनक होने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। सभी प्राणियों व पौधों के लिए संवेदनशीलता तथा सम्मान मानव जीवन में समृद्धि और भावनात्मक गहराई आपस में जुड़े हुए हैं। इसलिए संवेदनशीलता को शिक्षा के उद्धेश्यों के रूप में शामिल करना महत्वपूर्ण हैं।

समानता पर आधारित कोई भी समाज जो अपने बारे में सोच सके, निर्णय ले सके और अपनी बेहतरी के लिए आपसी समझ बना सके, एक–दूसरे के प्रति सम्मान और विचारों का आदान–प्रदान कर सके ऐसे लोकतांत्रिक समाज के नागरिकों में निरन्तर संवाद की आवश्यकता होती है। अतः बिना शर्त सभी के लिए समान भागीदारी और निष्पक्ष व विवेकसंगत बातचीत की प्रतिबद्धता शायद सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्य है। किसी भी विवेकसंगत बातचीत में निर्णय लेने के लिए साझा मापदण्ड की जरूरत होती है और इन मापदण्डों व क्षमताओं को नागरिकों में विकसित करने का एकमात्र साधन शिक्षा ही है।

जैसा कि हम जानते हैं कि कुछ सामाजिक व सांस्कृतिक सम्पदा मानव जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, उनके उत्पादन के लिए मेहनत व कौशल की आवश्यकता होती है। हम सभी को इस उत्पादन में योगदान कर पाने में सक्षम होना चाहिए। वर्तमान समाज में आवश्यक कौशलों की जटिलता के लिए किसी दृष्टांत की जरूरत नहीं है। इसलिए, शिक्षा में विभिन्न कौशलों के विकास और उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की अनदेखी नहीं की जा सकती।

उपरोक्त विचारों के आधार पर सभी बच्चों के लिए शैक्षिक अवसर विकसित करने के लिए दिगन्तर प्रयासरत है, और कुछ हद तक दिगन्तर को इनमें सफलता भी मिली है।

हम एक ऐसे बहुलवादी व लोकतांत्रिक समाज की कल्पना करते हैं जो सभी लोगों के लिए न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा का रक्षक हो। दिगन्तर शिक्षा के माध्यम से, वैचारिक स्वायत्तता तथा विचारों को कर्म में परिणित करने का साहस प्रदान करता है, इसी सपने को पूरा करने में अपना योगदान करता है।

❑❑❑

3. दिगन्तर विद्यालय

आरंभिक शिक्षा में बेहतर विकल्प तलाशने तथा विकसित करने के लिए दिगन्तर 1978 से ही प्रयासरत है। वर्तमान में दिगन्तर के दो विद्यालय संचालित हैं। जिनमें शैक्षिक सिद्धान्तों, नीतियों, उपयुक्त शिक्षण सामग्री और शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए सतत् रूप से काम किया जा रहा है और साथ में शिक्षा के स्वरूप तथा उद्देश्यों पर समुदाय के साथ नियमित संवाद करते हुए विद्यालयों के संचालन में उनकी सक्रिय भागीदारी पर भी विशेष बल दिया गया।

वर्तमान में दिगन्तर के दोनों विद्यालय जयपुर शहर के नजदीक ग्रामीण इलाकों खो–रैबारियान (खोनागोरियान) तथा भावगढ़ बंध्या गाँवों में संचालित हैं, जहाँ तीन सौ से ज्यादा बच्चे अध्ययनरत हैं।

3.1 दिगन्तर विद्यालयों की विशेषताएं

- दिगन्तर विद्यालयों में सभी बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता हैं। बच्चे अपने अनुभव व क्षमताओं के आधार पर एक–दूसरे के सहयोग से सीखते–सिखाते हैं। इसलिए यहां बच्चों को कक्षाओं में बांटने की बजाय उनके स्तरानुकूल समूह बनाए गए हैं।
- दिगन्तर विद्यालयों में सभी बच्चों को सभी प्रकार की शिक्षण सामग्री (पाठ्यपुस्तकें, वर्कशीट्स, हस्तकार्य हेतु क्ले व कला सामग्री और स्टेशनरी सामान) निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं।
- जिस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आधार पर वर्तमान में विद्यालयों में शिक्षाक्रम, शिक्षण विधा तथा सतत् व व्यापक मूल्यांकन की बात की जा रही है, दिगन्तर विद्यालय 1987 से उन्हीं सिद्धान्तों व विचारों की तर्ज पर संचालित हैं।
- विगत 35 वर्षों से संचालित दिगन्तर विद्यालयों ने देशभर की अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के लिए अकादमिक मदद व स्रोत के रूप में अपनी एक विशेष पहचान दर्ज करवाई है।

- दिगन्तर विद्यालयों की एक विशेषता यह भी है कि 5–6 किलोमीटर के दायरे में स्थित लगभग 28 ढाणियों में सरकारी और कई निजी स्कूल होने के बावजूद भी दिगन्तर विद्यालयों में बच्चे अध्ययन के लिए आ रहे हैं।
- क्षेत्र की बालिकाएं उच्च शिक्षा अर्जित करने से वंचित न रहे इसको मध्य नजर रखते हुए बालिकाओं व समुदाय की पहल पर दिगन्तर विद्यालय में माध्यमिक स्तर की कक्षाएँ भी आरंभ की गईं हैं।
- उच्च प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा में अर्जित अनुभवों के आधार पर हमने उच्च माध्यमिक के लिए भी बेहतर विकल्प तलाशना आरम्भ किया है, जिसमें विशेषतौर पर बालिकाओं को उच्च शिक्षा में मदद की जा रही है।

- दिगन्तर विद्यालयों में प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक बच्चों को कुल 11 समूहों में पढ़ाई करवाते हैं, जिनमें से 7 समूह प्राथमिक के, 3 समूह उच्च प्राथमिक के तथा 1 समूह माध्यमिक का है।
- संस्था निदेशक के निर्देशन में दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों को, कार्यक्रम समन्वयक व प्रबन्ध समूह द्वारा नियमित रूप से अकादमिक व व्यवस्थात्मक मदद उपलब्ध करवाई जाती है।

3.2 वर्तमान में बच्चों व शिक्षकों का विवरण

वर्तमान में दिगन्तर विद्यालयों (भावगढ़ बंध्या व खो रेबारियान) में अध्ययनरत बच्चों एवं शिक्षकों का विवरण नीचे दिया गया है।

- दिगन्तर विद्यालयों में 6 शिक्षक प्राथमिक के, 3 शिक्षक उच्च प्राथमिक से माध्यमिक के, 1 कारपेन्ट्री शिक्षक, 1 कम्प्यूटर शिक्षक, 2 समन्वयक, 2 चौकीदार, 1 कैम्पस प्रभारी और 1 पुस्तकालय प्रभारी को मिलाकर कुल 17 कार्मिक कार्यरत हैं।
- दिगन्तर विद्यालयों में 215 (भावगढ बंध्या में 179 और खो रैबारियान में 36) बच्चे अध्ययनरत हैं। जिनमें से प्राथमिक स्तर के 112 बच्चे, उच्च प्राथमिक के 49 और माध्यमिक स्तर के 54 बच्चे अध्ययनरत हैं।

क्र.सं.	समूह का नाम	शिक्षक/शिक्षिका	कुल बच्चे	लड़का	लड़की	टिप्पणी
1.	चन्दा	मंजू सिंह	22	9	13	
2.	महल	विवेक सिंह	14	5	9	
3.	तितली	विजयता	18	7	11	
4.	आँगन	घनश्याम	26	10	16	
5.	सावन	रामजीलाल	18	11	7	

6.	रोशनी	रेखा	14	6	8	
7.	महक	रेखा	13	2	11	
8.	अमन	मधु	16	4	12	
9.	मेहंदी	वेदप्रकाश	20	4	16	
10.	चाँदनी	गुणमाला	26	7	19	
11.	संगीत	मधु	28	10	18	
	कुल		**215**	**75**	**140**	

3.3 कोविड–19 प्रथम चरण की शैक्षिक गतिविधियां

इस सत्र में कोविड–19 महामारी के कारण शुरुआत से ही देश भर में लॉकडाउन लागू हो गया था, जिसके कारण स्कूलों में शिक्षण कार्य पूरी तरह से बन्द रहा। लॉकडाउन के प्रथम चरण में दिगन्तर विद्यालय के शिक्षक व समन्वयकों ने घर से ही बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने का कार्य किया लेकिन दूसरे चरण में शिक्षकों द्वारा बच्चों को ऑनलाईन कक्षाओं के माध्यम से संपर्क कर अध्ययन करवाने की कोशिश की गई।

यदि हम इस शिक्षा सत्र के पूरे 10 माह के कोरोनाकाल की बात करें तो देखेंगे कि दिगन्तर विद्यालयों से कुल 31 बच्चे ड्रॉपआऊट हो गये। यानी इस सत्र की शुरुआत में महामारी से पूर्व दिगन्तर विद्यालयों में कुल 246 बच्चे अध्ययनरत थे, लेकिन कोरोना के कारण कुछ बच्चे अपने गांव चले गये अतः विद्यालय में कुल 215 बच्चे ही शेष रह गये।

कोविड–19 महामारी के प्रथम चरण में स्कूलें बन्द रहने के दौरान दिगन्तर शिक्षक, समन्वयक समूह एवं निदेशक द्वारा विभिन्न मुद्दों पर ऑनलाइन चिंतन एवं विमर्श करते हुए बच्चों के लिए घर से ही काफी शिक्षण सामग्री तैयार की गई। यह सामग्री भविष्य में अध्यापन कार्यों में काफी उपयोगी रहेगी। तैयार की गई सामग्री का विवरण इस प्रकार है :–

- अपने अनुभव, चिंतन एवं सृजनात्मकता का इस्तेमाल करते हुये शिक्षकों एवं समन्वयक समूह ने प्राथमिक/उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए प्रतिदिन कहानी, कविता व नाटक लिखे, और इस प्रकार तैयार सामग्री द्वारा शिक्षकों ने अपनी रचनाओं की एक–एक कितबिया तैयार करवाई हैं।
- विद्यालय में बच्चों द्वारा की जाने वाली गैर अकादमिक गतिविधियों में स्वतंत्रता दिवस पर शिक्षकों द्वारा एक–एक नाटक लिखा गया जो कि बच्चों के लिए स्तंत्रता के संघर्ष को समझने में काफी मददगार रहेगा।

- दिगन्तर शिक्षकों ने अपनी क्षमताओं को बेहतर करने के लिए पुस्तकालय से अंग्रेजी की पुस्तकें लेकर उनका अध्ययन किया और कॉम्यूनिकेशन समन्वयक की मदद से अंग्रेजी भाषा में कुछ कहानी एवं कविताओं का सृजन किया। यह बुकलेट शिक्षकों को भविष्य में बच्चों के साथ अंग्रेजी शिक्षण कार्य करने के लिए बेहतर दिशा देंगी। इन सबसे शिक्षकों की अंग्रेजी भाषा में अपनी क्षमताओं को बेहतर करने का मौका भी मिला।
- कुछ शिक्षकों ने उर्दू में भी कहानी, कविताओं और पहेलियों का सृजन किया है। इसके साथ ही लोक प्रचलित कहानी व गीतों का संकलन कर कुछ पुस्तिकाएं तैयार की गई हैं।
- दिगन्तर में कार्यरत शिक्षक काफी समय से बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं अतः सबके पास बच्चों के साथ कार्य करने के बहुत सारे अनुभव भी होते हैं। इसको ध्यान में रखते हुए सभी शिक्षकों ने अपने शिक्षण अनुभवों को लिख कर कितबियाँ तैयार की। इन अनुभवों के द्वारा दिगन्तर से बाहर के शिक्षकों भी दिगन्तर शिक्षकों के अनुभवों और उनके द्वारा किये जा रहे नवाचारों को समझने में सहायता मिल सकेगी।
- दिगन्तर विद्यालयों में प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक SCERT & NCERT की पाठ्यपुस्तकों का भी उपयोग किया जाता है। इसलिए इन पुस्तकों पर बच्चों के साथ समूह में काम करने के लिए पाठ दर पाठ शिक्षकों द्वारा अध्यापन गतिविधियाँ तैयार की गईं। अतः सभी शिक्षकों एवं समन्वयक समूह द्वारा प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के लिए हिन्दी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत व पर्यावरण अध्ययन पर अध्यापन गतिविधियाँ तैयार करने का कार्य किया गया।

शिक्षक सहायक पुस्तिका

एस.सी.ई.आर.टी. की प्राथमिक स्तर कक्षा 1 से 5 की पुस्तकों के रचनात्मक उपयोग हेतु बनाई गई गतिविधियां

प्रथम प्रारूप

Covid-19 के तहत Work Form Home
(अप्रैल 2020) में शिक्षकों द्वारा तैयार सामग्री

शिक्षक : घनश्याम कुम्हार   विषय : पर्यावरण अध्ययन

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड, जगतपुरा, जयपुर 302017
फोन : 0141-2750310, E-mail : vidyalay@digantar.org
E-mail Director : reenadasroy@gmail.com
Web : www.digantar.org, School Website : www.digantarvidyalay.org

अध्यापन गतिविधियां एवं सामग्री निर्माण :

- वर्क फ्रोम होम के तहत किये गये उपरोक्त कार्य के बाद शिक्षकों ने विद्यालय आकर इन पुस्तकों पर कार्य करने के दौरान जो चुनौतियाँ रही शिक्षकों ने सबसे पहले उनकी सूची तैयार की और उसके बाद इस सूची के अनुसार आवश्यक गतिविधियों का निर्माण किया।
- शिक्षण गतिविधियां निर्माण में विषय अनुसार आवश्यक शिक्षण सामग्री पैकेज जिसमें प्राथमिक समूह के लिए विभिन्न प्रकार के कार्ड, चार्ट और एरो कार्ड तैयार किये गए। उच्च प्राथमिक स्तर की पुस्तकों के लिए विषय अनुसार अवधारधाओं के लिए विभिन्न कार्डस, विज्ञान शिक्षण चार्ट और विभिन्न प्रकार के मॉडल इत्यादि शामिल हैं। इस दौरान विकसित की गई शिक्षण सामग्री से न केवल शिक्षकों के क्षमतावर्द्धन में मदद मिलेगी बल्कि बच्चों को समूह में शिक्षण दौरान सीखने–सिखाने में सहयोग मिलेगा। यह सामग्री शिक्षकों को बच्चों की क्षमता अनुसार SCERT & NCERT की पुस्तकों के साथ काम सीखने में एक बेहतर दिशा देगी।

लॉकडाउन द्वितीय चरण की शैक्षिक गतिविधियां

लॉकडाउन के द्वितीय चरण आते–आते देशभर से शिक्षण संस्थानों द्वारा बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण करवाने की खबरें आम हो चुकी थीं। चूंकि ऑनलाइन शिक्षण में दिगन्तर का कोई अनुभव नहीं था और न ही लॉकडाउन के प्रथम चरण के दौरान भी दिगन्तर इस बात से पूरी तरह आस्वस्त हो पाया कि हम जिस क्षेत्र में कार्यरत हैं वहाँ के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण हेतु आवश्यक तकनीकि सुविधाओं के साथ किसी तरह का शिक्षण कार्य करवा कर बच्चों के साथ किसी प्रकार का न्याय कर पाएंगे।

समन्वयक समूह एवं निदेशक ने बच्चों की पढ़ाई को लेकर लगातार विचार विमर्श किया और जुलाई 2020 में उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक के 5–5 बच्चों को समूह में स्कूल बुलाकर किताबें व कॉपियां दी गई, जिससे कि बच्चे अपने स्तर पर पढ़ाई शुरू कर सकें। क्योंकि हमारा शुरुआत से ही इस बात पर भी फोकस रहा है कि बच्चे सामग्री का उपयोग करते हुये स्वयं सीखने में आत्मनिर्भर बने।

हमने बच्चों के लिए पुस्तकें खरीदी और उन पर कवर आदि चढ़ाकर तैयार किया गया। 17 जुलाई से बच्चों के लिए पुस्तकें लेने हेतु अभिभावकों से फोन पर बातचीत कर उन्हें विद्यालय बुलाया गया और साथ में विद्यालय की वार्षिक शुल्क 1000 रुपये जमा करवाने के लिए भी बोला गया। इसके बाद 6 सितम्बर तक मात्र 50 बच्चों ने ही फीस जमा करवा कर किताबें प्राप्त की। इस दौरान अभिभावकों एवं बच्चों ने भी ऑनलाइन शिक्षण का आग्रह किया।

ऑनलाइन शिक्षण

अभिभावकों एवं बच्चों की ऑनलाइन शिक्षण के आग्रह पर 4 सितम्बर 2020 को निदेशक व समन्वयक समूह की एक ऑनलाइन बैठक हुई। इस बैठक में बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण करवाने को लेकर बातचीत हुई। काफी चर्चा के बाद तय किया गया कि सबसे पहले हमें यह पता लगाना है कि कितने बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षण हेतु फोन या कम्प्यूटर की सुविधा उपलब्ध है जिनके माध्यम से वो ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ सकते हैं।

मीटिंग के अनुसार समन्वयक समूह ने अगले ही दिन 220 बच्चों के घर फोन किया और पाया कि लगभग 119 बच्चों के घर में ऑनलाइन शिक्षण हेतु फोन या कम्प्यूटर उपलब्ध हैं। लगभग 30 बच्चों के घर दिये गये नम्बरों पर संपर्क नहीं हो पाया क्योंकि कुछ नम्बर अस्तित्व में नहीं थे तो कईयों ने दो–तीन बार घण्टी जाने के बाद भी फोन नहीं उठाया। बाकी बच्चों से संपर्क करने की प्रक्रिया आगे जारी रही।

- टेलिफोन पर अभिभावकों से बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षण शुरू करने के बारे में बात की गई तो उन्हें अच्छा लगा, उत्साहित भी नजर आए। साथ ही जिन अभिभावकों के घर में फोन की सुविधा नहीं थी, उन्होंने भी शीघ्र व्यवस्था करने का आश्वासन दिया।
- अभिभावकों से बातचीत से निकल कर आया कि घर में एक ही फोन है, जिसे वे दिन में काम पर जाते वक्त अपने साथ में ले जाते हैं और शाम को 6 से 7 बजे तक घर आ पाते हैं। इसलिए उनके अनुसार बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षण कार्य सुबह 8 बजे से पहले या सायं 7 बजे के बाद करवाया जा सकता है।
- 6 सितम्बर 2020 को निदेशक व समन्वयक समूह ने फिर से मीटिंग की जिसमें ऑनलाइन शिक्षण की रूपरेखा तथा बच्चों व शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण का समय आदि पर विचार किया गया।

- ऑनलाइन शिक्षण के विचार को शिक्षकों के साथ साझा किया गया। चूंकि दिगन्तर का शुरुआत से ही सीखने के प्रति नजरिया रहा है कि सीखना–सिखाना जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और उसमें स्वयं के लिए स्वयं को ही सीखना होता है। इसलिए हमें लगता है कि आरंभिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को स्वप्रेरित एवं सीखने में स्वावलंबी बनाना होना चाहिए। दिगन्तर शिक्षक इसे ध्यान में रखकर बच्चों के साथ कार्य करते रहे हैं, जिसके कारण हमारे बच्चों में स्वयं सीखने की आदत का एक स्तर पर विकास भी हुआ है। हमें इस आदत का उपयोग करते हुये ऑनलाइन शिक्षण आरम्भ करने का निर्णय लिया। अर्थात हमारे शिक्षक बहुत कम मदद के साथ भी बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य करवा सकते थे। इस विचार पर सभी शिक्षक सहमत हुए और उन्होंने इसकी तैयारी शुरू कर दी।
- लेकिन यह विचार पूर्व प्राथमिक से प्रथम कक्षा तक के बच्चों के साथ काम आने वाला नहीं था क्योंकि इन बच्चों को अभी पढ़ना–लिखना नहीं आता था। इसलिए हमने ऑनलाईन शिक्षण हेतु उन्हीं 186 बच्चों को प्रगति रिपोर्ट द्वारा सूचीबद्ध किया, जिन्हें पढ़ना–लिखना आ चुका था।

- सूचीबद्ध बच्चों में से जिन अभिभावकों ने विद्यालय में वार्षिक शुल्क जमा करवाकर पुस्तकें प्राप्त कर ली थी, उन बच्चों की ऑनलाइन शिक्षण के लिए एक समय सारणी तैयार की गई।
- शिक्षकों ने भी ऑनलाइन शिक्षण पूर्व अंकन व योजना की फाईलों के अनुसार प्रत्येक बच्चे के स्तर को समझा और ऑनलाइन शिक्षण आरम्भ करवाने की रूपरेखा तैयार की गई।
- शिक्षकों ने तय किया कि वे प्रतिदिन शिक्षण योजना बनाएंगे और दिनभर के कार्य का फीडबैक लिखकर समन्वयक समूह को भेजेंगे। इसके साथ में आवश्यकतानुसार बच्चों के लिए वर्कशीट भी तैयार करेंगे।
- ऑनलाइन शिक्षण में बच्चों और अभिभावकों की रुचि का अंदाजा इससे भी लगा सकते हैं कि मात्र पांच दिनों में ही विद्यालय में वार्षिक टोकन मनी जमा करवा कर पुस्तकें लेने वाले बच्चों की संख्या 50 से बढ़कर 108 हो चुकी थी। शुरुआत में इस संख्या को 50 तक पहुंचने में कई दिन लग गये थे।
- ऑनलाइन शिक्षण में उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के साथ काम करने में काफी समस्याएं आईं, जिनमें शिक्षण समय को लेकर बच्चों की समस्या, रोज नये बच्चे जुड़ने की वजह से पैदा हुई समस्याएं और कुछ तकनीकि समस्याएं भी आ रही थी। जिनके लिए सभी शिक्षक प्रत्येक शनिवार ऑनलाइन बैठक करके समाधान तलाशते। इस दौरान सभी शिक्षक घर से ही बच्चों के साथ काम कर रहे थे। लेकिन जैसे ही जनवरी में उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए सरकार द्वारा कुछ पाबंदियों के साथ स्कूल खोले तो शिक्षकों द्वारा विद्यालय में आकर ऑनलाइन शिक्षण कार्य करवाया गया।

- शिक्षकों के द्वारा तैयार योजना अंकन और फीडबैक से लग रहा था कि बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण के दौरान जो टास्क दिया जा रहा था, वे उसको अपने स्तर पर पूरा करने का भरपूर प्रयास कर रहे थे, जिनको हम ऑनलाइन शिक्षण की सहजता व उपलब्धि के रूप में देख सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षण के मुख्य बिन्दु :

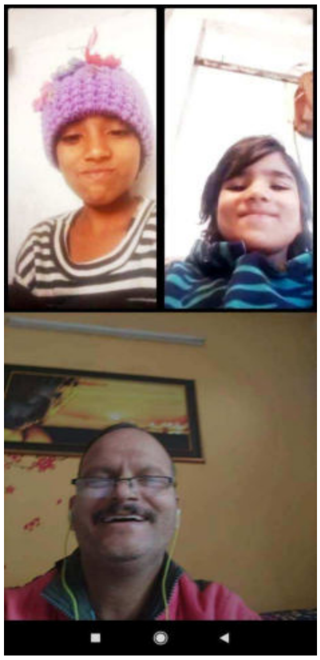

- शिक्षकों ने बच्चों एवं उनके माता–पिता के साथ बातचीत ऑनलाइन शिक्षण का समय प्रातः 07:00 बजे से रात्री 8:30 तक का रखा गया, क्योंकि दिन में काफी बच्चों के पास मोबाइल उपलब्ध नहीं थे।
- ऑनलाइन शिक्षण को बच्चों के लिए सरल व रुचिकर बनाने के लिए शिक्षकों ने शुरुआत में ऑब्जैक्टिव टाइप वर्कशीट तैयार कर बच्चों को दी गई।
- बच्चों को भाषा शिक्षण में सीखने हेतु स्तरानुसार स्वयं पढ़ने के लिए तय पुस्तकों से कहानी–कविताएं दी गई। उनको पढ़ने के बाद फोन के जरिये बच्चों से उन पर बातचीत की गई। इसके अलावा बच्चों द्वारा पढ़ी गई कहानी–कविताओं पर काल्पनिक व सूचनात्मक दोनों प्रकार के सवाल तैयार कर बच्चों को कॉपी में करने के लिए दिये गये।
- यदि कोई बच्चा दिगन्तर द्वारा प्रकाशित गणित बोध की पुस्तक में पेज दर पेज कार्य कर रहा है तो किये गये कार्य की फोटो प्राप्त कर शिक्षक अवलोकन करते और समस्या वाले बिन्दुओं पर ऑनलाइन ही कैमरे के माध्यम से उन बिन्दुओं पर बच्चे की मदद करते। उसके बाद भी यदि बच्चे की समझ नहीं बन पाती तो उसकी समस्या के आधार पर शिक्षक नयी तरह की वकशीट तैयार कर बच्चे को भेजता है। इस प्रकार समस्या वाले बिन्दुओं के समाधान हेतु भेजी गई नई वर्कशीट पर जब बच्चा कार्य कर लेता तब जाकर उसे आगे के लिए टारगेट दिया जाता था।

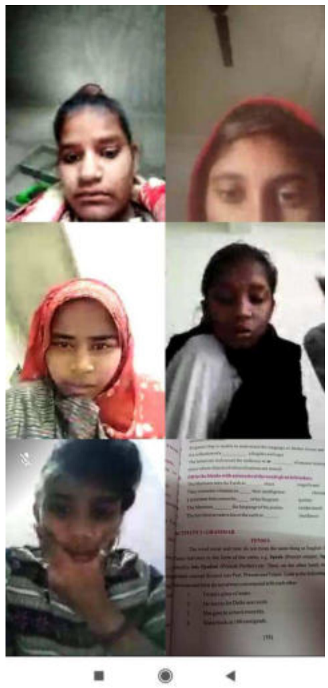

- उच्च प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक के बच्चों को ज्यादातर काम स्वयं करने के लिए दिये गये क्योंकि जब तक बच्चा एक बार स्वयं उस पाठ या सवाल पर कार्य नहीं करेगा तब तक बच्चों के लिए समझाने में समस्या रहेगी। अतः शिक्षक यह कोशिश कर रहे थे कि बालक स्वयं अपनी समस्या को शिक्षक के समक्ष रखें। शिक्षक प्रतिदिन बच्चों को अपने विषय का मात्र टारगेट निर्धारित करने में मदद करते थे एवं चर्चा की जाती रही है।

- शिक्षकों ने प्रत्येक दिन ऑफलाइन शिक्षण की तरह ही बच्चों के लिए योजना तैयार की तथा विगत दिवस को किये गये उनके कार्य का अंकन करने का काम भी किया।

ऑनलाइन शिक्षण में बच्चों की सृजनात्मकता

- दिगन्तर में शुरुआत से ही बच्चों की सृजनात्मक क्षमता का विकास करने पर फोकस रहा है। इसलिए हमने इस कार्य को ऑनलाइन शिक्षण के दौरान भी जारी रखा। इसके तहत शिक्षक बच्चों के लिए इस प्रकार की गतिविधियां तैयार करते, जिनमें सीखने के आनन्द के साथ चुनौतियां भी हों।
- इसके अन्तर्गत बच्चों को चित्र भेजे गए जिन पर कहानी व कविताएं तैयार करनी थी। इसके अलावा बच्चों से लॉकडाउन के द्वौरान अपने अनुभव लिखवाना, अपने घर के किसी सदस्य की दिनचर्या का अवलोकन कर उसे अपनी कॉपी में लिखने के लिए कार्य दिया गया। आदि...
- ऐसे कार्य के लिए शिक्षकों ने पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की पत्र–पत्रिकाओं की मदद भी ली।

उपरोक्त ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के कुछ उदाहरण मात्र हैं। इनके अलावा भी शिक्षक अपने स्तर पर बच्चों के स्तरानुसार स्वयं सोचकर विविभन्न प्रकार की गतिविधियां व कार्य करवाते रहे हैं।

ऑनलाइन शिक्षण पर शिक्षकों की प्रतिक्रियाएं

- ऑनलाईन बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करवाना यह हमारा पहला अनुभव था अतः हमें यह काफी चुनौतिपूर्ण भी लग रहा था कि हम जिस प्रकार बच्चों के साथ कक्षा में शिक्षण कार्य करवाते थे उसी प्रकार कैसे काम कर पायेंगे।
- शुरुआत में जब बच्चों से बात की तो काफी समस्याओं का सामना भी करना पड़ा जिसमें की फोन के जरिये व्हाट्सप्प से बच्चों के साथ बात करना और अवधारणाओं को समझाने में काफी समस्या आ रही थी।
- ऑनलाइन शिक्षण के दौरान सभी शिक्षकों को तकनीकि रूप से बहुत सारी चीजों को सीखने की जरूरत पड़ी। जिसके जरिये वे सहज रूप से बच्चों तक अपनी बात पहुँचा पाये। अभी सहायक शिक्षण सामग्री व अपने हाथों से जिस प्रकार चीजों को करके देख पाते थे वह तो संभव नहीं था लेकिन इस प्रक्रिया में पूरा प्रयास इसी बात पर रहा कि बच्चे जो भी सीखें, समझकर सीखें एवं एक–दूसरे की मदद से सीखें। इसके लिए शिक्षकों द्वारा व्हाट्सएप पर उपसमूह बना कर काम किया। इसके साथ ही उपसमूहों में चर्चा कर एक–दूसरे की बात को समझते हुये सीखने में मददगार साबित हुआ है।
- सभी शिक्षक प्रातः 7:00 बजे के बाद बच्चों के साथ ऑनलाईन शिक्षण से जुड़ जाते जो रात्री 8:00 बजे तक नियमित रूप से चलता। यह काफी चुनौतिपूर्ण था लेकिन बच्चों के उत्साह व उनके सीखने की लगन ने इसे काफी सहज बना दिया है।

ऑनलाइन शिक्षण पर छात्रों की प्रतिक्रिया

- ऑनलाइन शिक्षण शुरू किया तो बच्चों को काफी अच्छा लगा। क्योंकि उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के बच्चे अपनी शिक्षा को लेकर काफी चिन्तित हो रहे थे। ये बच्चे ऑनलाइन शिक्षण से पहले भी अपने स्तर पर पढ़ने का प्रयास कर रहे थे लेकिन बहुत सफल नहीं हो पा रहे थे। इन बच्चों का कहना था कि ऑनलाइन शिक्षण शुरू होने के बाद हमें सीखने के लिए एक नई दिशा मिली है। बच्चों में पढ़ाई के प्रति काफी उत्साह देखने को मिला क्योंकि उनको स्वयं अध्ययन कर जो टारगेट दिये गये वे उनको लगातार समय पर पूरा कर रहे थे। इसके बावजूद भी शिक्षकों का मानना था कि जिस प्रकार से विद्यालय में अध्ययन होता था उस स्तर पर तो ऑनलाइन शिक्षण नहीं पहुंच पाया।
- ऑनलाइन के शिक्षण के दौरान जो बच्चे प्राथमिक स्तर में पढ़ रहे थे, उनको बड़े स्तर पर अध्ययन कर रहे बच्चों द्वारा भी सीखने–सिखाने में मदद करते देखा गया। इस प्रकार की गई मदद भी बच्चों में एक–दूसरे से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सहज व सरल बना रही थी।
- समस्याओं देखें तो ऑनलाइन शिक्षण के दौरान कई बार पर्याप्त इंटरनेट नहीं चलना, घर पर मोबाइल न होने की परेशानी और जब इंटरनेट ठीक से काम नहीं करता तो बच्चों के चहरे से यह साफ नजर आने लगता था कि वे अध्ययन को लेकर काफी परेशान हो रहे हैं। इसके अलावा ऑनलाइन शिक्षण के दौरान बच्चों द्वारा बार–बार यह कहना कि हमें स्कूल की बहुत

याद आ रही है और आप शिक्षकों से भी मिलना चाहते हैं जल्दी से स्कूलों खोलो। ऐसी बातें बच्चों का स्कूल के प्रति आत्मियता को दर्शाती हैं।

अभिभावकों की प्रतिक्रिया

- जैसे ही बच्चों का ऑनलाइन शिक्षण प्रारम्भ हुआ तो जो अभिभावक लॉकडाउन के कारण काफी समय से अपने बच्चों की पढ़ाई को लेकर चिन्तित थे वे तो काफी खुश हुये। लेकिन कुछ अभिभावक जिनका इन दिनों में रोजगार बन्द हो गया या चला गया, वे बच्चों के अध्ययन के लिए फोन की सुविधा व टोकन मनी जमा करवाने के लिए काफी परेशान भी दिखाई दिये। इसके बावजूद भी लगभग सभी अभिभावकों ने थोड़ा समय लेकर अपने बच्चों को फोन की सुविधा जरूर उपलब्ध कराई और विद्यालय शुल्क जमा करवा कर उनके लिए शिक्षण सामग्री भी प्राप्त की। उनका कहना था कि जब हमारे बच्चे मोबाइल पर ऑनलाइन शिक्षण ले रहे होते थे तो हमें काफी अच्छा लगता है।

ऑनलाइन शिक्षण की चुनौतियाँ

- बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षण करवाना हमारे लिए भी पहला और अनौखा अनुभव था। शुरुआत में हमें भी यह चुनौतिपूर्ण कार्य लग रहा था और मन में आशंका बनी हुई थी कि हम जैसे कक्षा में शिक्षण कार्य करवाते थे उसी प्रकार बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य कैसे करवा पायेंगे ?

- इससे पहले दिगन्तर शिक्षकों को तकनीकि रूप से ऑनलाइन प्लेटफार्मों की कोई ज्यादा समझ नहीं थी लेकिन बच्चों के लिए इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षण आवश्यकता के कारण उन्हें बहुत सारी चीजें तकनीकि रूप से सीखनी पड़ी, जिनके द्वारा वे बच्चों तक अपनी बात पहुँचा पाये। शिक्षकों द्वारा बच्चों के स्तरानुसार व्हाट्सप्प पर उपसमूह बना कर काम किया गया। इन उपसमूहों में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने को लेकर चर्चाएं की, जिससे एक–दूसरे की बातों को समझने में काफी मदद मिली।

- शिक्षण के दौरान इंटरनेट ठीक से नहीं चलने से कई बार ऑनलाइन शिक्षण कार्य में बाधा भी उत्पन्न हुई।
- कई बार शिक्षण के दौरान उसी फोन पर अभिभावकों के फोन आ जाते थे, जिसके कारण उनका फोन काफी देर तक बातचीत में व्यस्त हो जाता और बच्चों के शिक्षण में व्यवधान होता था।

- कुछ अभिभावक बच्चे के लिए ऑनलाइन शिक्षण के लिए दिए गये समय पर किसी कारण से फोन नहीं उठा पाते, जिसके कारण बच्चों के शिक्षण में काफी समस्या पैदा हुई।

उपरोक्त समस्याओं में से अधिकतर पर तो हमने धीरे–धीरे एक स्तर तक पार पा लिया था, लेकिन इंटरनेट की समस्या हमारे हाथ में नहीं होने के कारण अन्त तक लगभग वैसी ही बनी रही है।

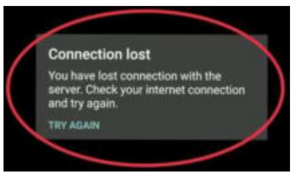

3.4 कोविड–19 : द्वितीय चरण की शैक्षिक गतिविधियाँ

विद्यालय में ऑफलाइन शिक्षण

जनवरी, 2021 में जैसे ही कोविड–19 महामारी के पहले चरण का प्रभाव थोड़ा कम हुआ तो राजस्थान सरकार ने कुछ शर्तों के साथ कक्षा 6 से 10 तक के बच्चों को दो चरणों में विद्यालयों में अध्ययन हेतु आने की अनुमति दे दी, लेकिन उसमें भी अभिभावकों की लिखित अनुमति जरूरी थी।

राजस्थान सरकार ने 18 जनवरी 2021 से कक्षा 9वीं व 10वीं के बच्चों के लिए तय गाइड लाइन के अनुसार स्कूल खोलने का आदेश दिया। सरकारी गाइड लाईन के अनुसार समन्वयक समूह ने निदेशक के साथ विचार विमर्श करके स्कूल खोलने की तैयारी शुरू की गई। जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से निम्न कार्य किये गये :–

- सभी समूह कक्षों की साफ–सफाई करवाई गई।
- बच्चों के लिए फर्नीचर को नियमानुसार कक्षा–कक्षों में दो गज दूरी की पालना पर लगाया गया।
- कोविड–19 से बचाव से संबंधित पोस्टर समूह कक्षों एवं विद्यालय में कई जगह चस्पा किये गये।
- विद्यालय आने वालों की थर्मल स्कैनिंग हेतु इन्फ्रारेड थर्मामीटर व ऑक्समीटर खरीदे गये।
- आने वाले बच्चों के नियमित हाथ धोने के लिए कैम्पस में अगल से 20 नये नल लगाये गये।
- अभिभावकों की अनुमति के लिए सहमति पत्र तैयार कर बच्चों के अभिभावाकों को भेजा गया।

- 18 जनवरी, 2021 से कक्षा 9वीं व 10वीं के बच्चों ने स्कूल आना शुरू किया। जिनका समय सरकारी नियमानुसार सुबह 09:30 से 12:30 तक का रखा गया। पूर्व तैयारी के अनुसार सभी बच्चों की थर्मल स्कैनिंग करके, साबून से हाथ धोने के बाद मास्क सहित विद्यालय में प्रवेश दिया गया। बच्चों की सीट पहले से ही निर्धारित कर दी गई थी। पहले दिन शिक्षकों ने कोविड–19 महामारी से बचाव को लेकर बच्चों से बातचीत की गई, जिसमें कुछ बातें इस प्रकार रही कि कोई भी अपनी सीट नहीं बदलेगा। किसी भी प्रकार की सामग्री का आदान–प्रदान नहीं किया जायेगा। हमेशा निश्चित दूरी बनाकर बातचीत करेंगे। विद्यालय में पूरे समय मास्क को लगाये रखना हैं, आदि।
- सरकार ने 8 फरवरी को दूसरे चरण में कक्षा 6वीं से 8वीं तक के बच्चों को कुछ शर्तों के साथ विद्यालय जाने की अनुमति दी। इस दौरान स्कूल बसों के संचालन की अनुमति नहीं होने के कारण बच्चे स्वयं अपने स्तर पर या फिर अभिभावकों के साथ स्कूल आये। लेकिन हमारे लिए यह समय काफी चुनौतिपूर्ण रहा क्योंकि इससे पहले दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को हर चीज की स्वतंत्रता होती थी, ऐसे बच्चों के बीच पूरे समय सामाजिक दूरी बनाये रखते हुये और मास्क के साथ पढ़ाना काफी चुनौतिपूर्ण होने के बावजूद भी हमने पूरी संवेदनशीलता के साथ शिक्षण कार्य आरम्भ किया। लेकिन कुछ ही समय में देशभर में महामारी का प्रकोप देशभर में दोबारा से बढ़ने के कारण सरकार ने स्कूलों बन्द कर दिया तो हमें फिर से ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया को अपनाना पड़ा।

3.5 कम्प्यूटर शिक्षण

लॉकडाउन के दौरान कम्प्यूटर शिक्षक द्वारा बच्चों के बेहतर कम्प्यूटर शिक्षण हेतु जिन क्षमताओं और तकनीक की जरूरत होती है, उनके अनुसार एक व्यवस्थित गतिविधि चार्ट बनाया गया। इस गतिविधि चार्ट के अनुसार अन्य विषयों की ही तरह योजना और अंकन व प्रपत्र भी तैयार किया। यह कार्य आने वाले समय में बच्चों के कम्प्यूटर शिक्षण में प्रगति और आकलन को नई दिशा देने में काम आएगा।

3.6 कारपेन्ट्री शिक्षण

कारपेन्ट्री शिक्षक द्वारा कोरोना महामारी में लॉकडाउन के दौरान बच्चों के साथ तो कोई शिक्षण कार्य नहीं करा पाये। लेकिन स्वयं के क्षमतावर्धन और भविष्य में बच्चों के शिक्षण में उपयोग हेतू इंटरनेट की मदद से कारपेन्ट्र शिक्षक ने बहुत सारे छोटे और नये मॉडल तैयार किये हैं। यह मॉडल भविष्य में बच्चों के साथ कारपेन्ट्री शिक्षण कार्य करवाने में काफी मददगार रहेंगे।

3.7 पुस्तकालय शिक्षण

दिगन्तर विद्यालय में बच्चों के लिए एक पुस्तकालय है, जिसमें वर्तमान में लगभग 20,000 पुस्तकें हैं। पुस्तकालय से बच्चे स्वयं पुस्तकें चुनकर अपने नाम इश्यू करवा कर ले जाते रहें हैं लेकिन कोरोना महामारी के कारण इस सत्र में विद्यालय नहीं खुलने की वजह से बच्चे पुस्तकें इश्यू करवाने से वंचित रह गए। इस बार शिक्षकों द्वारा अपने स्तर पर पुस्तकें इश्यू करवाकर बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण के दौरान कहानी सुनाना, कहानियों पर बातचीत करना आदि तरह से जरूर उपयोग किया गया।

इस सत्र में सभी शिक्षकों की मदद से पुस्तकालय को बेहतर व्यवस्थित करने के लिए भौतिक सत्यापन किया, जिससे पुस्तकालय के अधूरे कार्यों को कुछ गति मिली और पुस्तकालय व्यवस्थित हो पाया। इसके अलावा यदि हम कोरोना महामारी के दूसरे चरण में पुस्तकालय की बात करें तो शैक्षिक दृष्टि से शिक्षकों एवं बच्चों की मदद हेतू पुस्तकालय में बच्चों के लिए जितनी भी अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा की पुस्तकें थीं, उन्हें स्तरानुसार पुस्तकालय में जमाया गया। पूर्व प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक पांच चरणों में बांटा गया। शिक्षकों एवं समन्वयक समूह ने अपने अनुभवों का उपयोग करते हुये इसे बेहतर तरीके से पूर्ण किया। यह कार्य स्वयं बच्चों को पुस्तकें ढूंढने व इश्यू कराने में मददगार रहेगा और उनके बेहतर शिक्षण में उपयोगी रहेगा। पुस्तकालय प्रभारी द्वारा लॉकडाउन के दौरान अपने पुस्तकालय कार्यों के अलावा विद्यालय के लिए आवश्यक दस्तावेजों को टाईप करने का भी कार्य किया गया।

3.8 विद्यालय में विभिन्न बैठकें

आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों, शिक्षण व शैक्षिक सिद्धान्तों को दिशा देने में मदद करना दिगन्तर विद्यालय के उद्देश्य में निहित हैं। इसलिए दिगन्तर विद्यालय द्वारा नियमित विभिन्न स्तर पर बैठकें नियोजित की जाती हैं। काम के दौरान आ रही समस्याओं को आपस में बांटने, उसके उचित समाधान खोजने और तार्किक तरीके से सोच–विचार कर अपना काम करने में मदद के लिए कार्यक्रम में विभिन्न बैठकों का प्रावधान रखा गया।

कार्यक्रम समीक्षा बैठक

विद्यालय के बेतहर संचालन में सहयोग और समन्वयन के लिए महीने में दो बार (पाक्षिक) बैंठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों में अकादमिक समूह व व्यवस्थात्मक इकाई के व्यक्तियों के साथ संस्था की निदेशक भी सम्मिलित होती हैं। इन नियमित बैठकों में पिछले 15 दिनों में किये गए कार्यों की समीक्षा की जाती है और आगामी 15 दिनों की कार्य योजना तैयार की जाती है। आगामी योजना में मुख्य रूप से विद्यालय की जरूरतों को चिन्हित करने, विद्यालय के माहौल और गतिविधि कलेण्डर के मुताबिक प्रगति का आंकलन कर दिशा तय करने का काम किया जाता रहा है। इन बैठकों को विद्यालय में सामुहिक जिम्मेदारी एवं जवाबदेही की भावना का विकास करने तथा एक–दूसरे से सीखने–सिखाने का अवसर मुहैया कराने करवाने के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण यह बैठकें विद्यालय का संचालन सरलता से करने में सहायक रही हैं। इस सत्र के दौरान ऑनलाइन सम्पन्न हुई इन बैठकों में मुख्य रूप से निम्न मुद्दों पर बातचीत कर निर्णय लिये गये।

- लॉकडाउन में शिक्षकों के द्वारा वर्क फ्रोम होम के दौरान किये जाने वाले कार्यों की योजना तैयार करने में मदद करना और उसके लिए एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई।
- बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण हेतु शिक्षकों के लिए संसाधनों की व्यवस्था करना और बेहतर क्रियान्वयन के लिए विचार विमर्श कर योजना को अन्तिम रूप दिया गया।
- विद्यालय में अंग्रेजी शिक्षक हेतु विज्ञापन दिया और प्रक्रियानुसार शिक्षण का चयन किया गया।

- शिक्षकों की क्षमतावर्धन हेतु कार्यशाला की तैयारी व उसका क्रियान्वयन किया गया।
- शिक्षकों द्वारा तैयार की जाने वाली शिक्षण सामग्री पर विचार विमर्श किया गया।
- ऑनलाइन शिक्षण के सोफ्टवेयरों के प्रति आवश्यक सावधानियों पर विचार विमर्श।
- दिगन्तर विद्यालय के आवश्यक बजट एवं वित्तीय स्थिति पर विचार विमर्श किया गया।
- इस सत्र में लॉकडाउन के दौरान बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर विचार विमर्श किया गया।
- लॉकडाउन में आस–पास के 245 गरीब व असहाय परिवारों को राहत सामग्री पहुंचाने के बारे विचार विमर्श किया गया और एक व्यवस्थित रूपरेखा के अनुसार उनको मदद पहुंचाई गई।
- विद्यालय में बच्चों के समूह (कक्षा–कक्ष) में पठन–पाठन सामग्री के बेहतर डिस्पले और शिक्षकों के लिए आवश्यक टीएलएम कक्ष की व्यवस्था को बेहतर करने पर विचार विमर्श किया गया।
- विद्यालय पुस्तकालय की पुस्तकों और स्टोर की सामग्री की भौतिक सत्यापन रपट पर चर्चा।
- सरकारी पोर्टल पर विद्यालय के दस्तावेजों को अपलोड करने पर बातचीत की गई।
- लॉकडाउन में समुदाय के साथ संवाद कैसे कायम रखे इसकी रूपरेखा पर बातचीत की गई।

शेयरिंग बैठकें

दिगन्तर शिक्षकों द्वारा अपने काम की प्रगति, कठिनाईयों और आगामी कार्य योजना हेतु प्रत्येक सप्ताह एक बैठक आयोजित की जाती है, जिसको शेयरिंग बैठक कहते हैं। इस बैठक में सभी शिक्षक व समन्वयक शामिल होते हैं। यह बैठकें प्राथमिक समूह तक के शिक्षकों की अलग और उच्च प्राथमिक से माध्यमिक समूह तक के शिक्षकों की अलग होती रही हैं। लेकिन इस सत्र में लॉकडाउन की वजह से शिक्षकों ने शेयरिंग बैठकें ऑनलाइन ही आयोजित की, जिनमें प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक के सभी शिक्षक और समन्वयक शामिल रहे। इन बैठकों में मुख्य रूप से शिक्षण कार्य के दौरान आयी समस्याओं पर विचार–विमर्श किया जाता है और सभी मिलकर समस्याओं का समाधान खोजते हैं। इस प्रकार इन बैठकों में एक–दूसरे को समझने, आपसी संवाद को बढ़ावा देने, पारदर्शिता बनाये रखने और अपने काम को निखारने में सब के लिए उपयोगी होती हैं। पिछले सत्रों के अनुपात में इस बार बहुत कम ही शेयरिंग बैठकें हुई। इन बैठकों में बातचीत के मुद्दे इस प्रकार रहे।

- ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षकों आई समस्याओं को चिन्हित किया गया। इनमें ज्यादातर फोन से संबंधित तकनीकि समस्याएं थीं।
- ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षकों के द्वारा बच्चों के सीखने की प्रगति को समझना।
- शिक्षकों द्वारा शिक्षण सामग्री तैयार करना एवं उसके उपयोग के तरीके को साझा किया गया।
- ऑनलाइन शिक्षण के लिए शिक्षकों का क्षमतावर्धन हेतू बच्चों के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री तैयार करना।
- गणित एवं भाषा शिक्षण में पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों की मदद कैसे करें इस चर्चा की गई।
- समुदाय से ऑनलाइन बातचीत के दौरान आये विचारों पर शेयरिंग में विचार विमर्श किया गया।
- बच्चों की पत्रिका बातूनी हेतु सामग्री तैयार करने और उसके प्रकाशन की तैयारी करना।
- विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व मनाने हेतु तैयारी व रूपरेखा बनाना।
- लॉकडाउन में शिक्षकों द्वारा तैयार शिक्षण सामग्री का उपयोग कर परीक्षण करना।

व्यवस्थात्मक समीक्षा बैठकें

विद्यालयों के सुचारू एवं व्यवस्थित संचालन के लिये व्यवस्थात्मक कार्यों में मदद हेतु एक टीम है। यह टीम विद्यालय के व्यवस्था संबंधी कार्यों में मदद करने का कार्य करती है। यह टीम भी हर सप्ताह अपने कार्यों की समीक्षा हेतु एक बैठक आयोजित करती है। इनकी बैठकों के मुख्य मुद्दे इस प्रकार रहे हैं।

- चौकीदारों द्वारा विद्यालय की सुरक्षा हेतु की जाने वाली रात्रि ड्यूटी की समीक्षा करना।
- स्टोर से संबंधित निर्णय लेना, सामग्री का आदान–प्रदान और शिक्षकों एवं बच्चों के उपयोग हेतु आवश्यक सामग्री की बाजार से खरीददार कर उपलब्ध करवाना।
- पुस्तकालय कार्य की प्रगति जानना, भौतिक सत्यापन की योजना और उसका क्रियान्वयन।
- विद्यालय कैम्पस के पेड़–पौधों की सिंचाईं और सुरक्षा की नियमित समीक्षा करना।
- विद्यालय कैम्पस में बिजली व प्लम्बिंग संबंधी साप्ताहिक कार्य करने वाले व्यक्तियों से समन्वयन कर प्रत्येक सप्ताह आवश्यक रिपेरिंग और नये कार्य करवाना।
- विद्यालय कैम्पस की नियमित रूप से साफ–सफाई का ध्यान रखना।
- स्कूल बसों की देखरेख, रिपेरिंग एवं आवश्यक दस्तावेजों को नियमानुसार अपडेट रखना।
- विद्यालय में पीने के साफ पानी की व्यवस्था हेतु जिम्मेदार व्यक्तियों से नियमित बातचीत करना।

3.9 अकादमिक कार्यशालाएं

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षक विद्यालय से संबंधित शैक्षिक निर्णय लेने में सक्षम और आत्मनिर्भर होने चाहिए। इसके अलावा शिक्षा के सभी पहलुओं पर अच्छी समझ रखने के साथ कर्म और विचार से भी स्वायत्त हों। इसी विचार के अनुसार दिगन्तर विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की अकादमिक कार्यशालाओं और प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। दिगन्तर शिक्षकों को क्षमतावर्द्धन के लिए चार माह का सेवापूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है परन्तु यह प्र्याप्त नहीं है। क्योंकि सतत रूप से बच्चों के साथ शैक्षिक काम करते हुए शिक्षकों के सामने अनेक ऐसे अकादमिक मुद्दे आते हैं जिन पर उन्हें लम्बी चर्चा करने, शिक्षण सामग्री बनाने या किसी विषय के क्षेत्र में समझ बनाने की आवश्यकता होती है। अतः इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दिगन्तर शिक्षकों के लिए प्रत्येक वर्ष सेवा के दौरान भी दो

(ग्रीष्मकालीन एवं शीतकाली) बड़ी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, इस सत्र के दौरान भी इन कार्यशालाओं में निम्न मुद्दों पर शिक्षकों का प्रशिक्षण किया गया।

ग्रीष्मकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला

दिगन्तर शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला के संदर्भ में निदेशक व समन्वयक समूह ने एक ऑनलाइन बैठक कर इसकी रूपरेखा पर विचार विमर्श किया एवं इसके आधार पर कार्यशाला में मुख्य रूप से दो कार्य किये गये जो इस प्रकार से रहे।

- गीष्मकालीन कार्यशाला के लिए सभी शिक्षक और अकादमिक समन्वयक विद्यालय आये। लॉकडाउन के प्रथम चरण में SCERT व NCERT की पुस्तकों पर पाठ दर पाठ बनाई गई गतिविधियों को कम्प्यूटर शिक्षक की मदद से अपने लैपटॉप में व्यवस्थित किया और उन गतिविधियों के अनुसार जो सामग्री निर्माण करनी है, उसकी एक सूची तैयार की गई।

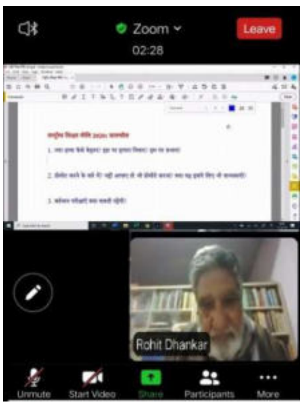

- इस कार्यशाला में 6 से 13 जून, 2020 के दौरान सभी शिक्षकों द्वारा प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर पर जो गतिविधियां SCERT व NCERT की पुस्तकों पर पाठ दर पाठ तैयार की गई थी, उन गतिविधियों में उपयोग हेतु आवश्यक सामग्री निर्माण का कार्य किया गया।
- प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1 से 5वीं तक अंग्रेजी की पुस्तकों के प्रत्येक पाठ को स्वयं शिक्षक द्वारा पढ़ने और समझने का कार्य किया गया। इस दौरान पाठ में आये अंग्रेजी के कठिन शब्दों का अर्थ समझा गया और उन शब्दों का उपयोग करते हुये कार्यशाला में नये वाक्य बनाये गये। प्रत्येक पाठ के अंत में बच्चों के लिए दिये गये सभी प्रश्नों के हल लिखना और अभ्यास के लिए दी गई अवधारणा के अनुसार नये उदाहरणों का सृजन किया गया। इसके आधार पर बच्चों के साथ प्रत्येक पाठ में कार्य करने के लिए क्या–क्या सामग्री चाहिए, उसकी लिस्ट तैयार की गई। पाठों में दी गई कविताओं को लयबद्ध गाना सीखना और उनके भावार्थ को सरलता से समझना।
- इसी प्रकार उच्च प्राथमिक स्तर पर भी पूर्व में दिये गये गतिविधि फोरमेट के अनुसार कक्षा 9वीं व 10वीं की पाठ्यपुस्तकों पर काम करने के लिए पाठ दर पाठ योजना तैयार की गई। जिसमें गतिविधियां, काम करने का तरीका और सामग्री क्या काम में लेंगे उसकी सूची तैयार की गई।

शीतकालीन क्षमतावर्द्धन कार्यशाला

इस साल लॉकडाउन के कारण शिक्षकों के लिए शीतकालीन क्षमतावर्धन कार्यशाला 26 से 31 दिसम्बर 2020 तक ऑनलाइन जूम सॉफ्टवेयर की मदद से गई। इस ऑनलाइन कार्यशाला में गतिविधि कलेण्डर के अनुसार निम्न बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई, जिनसे शिक्षकों को बच्चों के लिए नई दिशा तय करने में मदद मिली।

- शिक्षकों को ऑनलाईन शिक्षण में आई समस्याओं पर बातचीत कर उनका समाधान खोजा गया।
- ऑनलाइन शिक्षण के लिए शिक्षकों ने जूम सॉफ्टवेयर पर काम करने का प्रशिक्षण लिया और कार्यशाला के दौरान ही कुछ बच्चों को भी उनके मोबाइल में सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करवा कर प्रायोगिक तौर पर शिक्षण करवाया गया।
- ऑनलाइन कार्यशाला में समन्वयक एवं शिक्षकों द्वारा अपनी रुचि अनुसार दिगन्तर विद्यालय से जुड़े विभिन्न बिन्दुओं पर तैयार किये गये प्रेजेंटेशनों का प्रस्तुतिकरण किया और विस्तार से चर्चा की गई। प्रेजेंटेशन इस प्रकार थे।
  - स्कूल में सामूहिक जिम्मेदारी व सभा – शिक्षिका, रेखा जी द्वारा
  - शिक्षण विधियों के बारे में मान्यताएं व काम करने के तरीके – शिक्षक, रामजीलाल जी द्वारा
  - गणित शिक्षण के बारे में – शिक्षक, वेदप्रकाश जी द्वारा
  - शिक्षक की तैयारी योजना–अंकन के संदर्भ में क्यों–कैसे ? – शिक्षिका, गुणमाला जी द्वारा
  - भाषा शिक्षण के बारे में – शिक्षिका, मंजू सिंह जी द्वारा

- दिगन्तर स्कूलों में कला शिक्षण
  – शिक्षक, विवेक सिंह जी द्वारा
- स्कूल में पुस्तकालय की भूमिका
  – पुस्तकालयाध्यक्ष, गणपत जी द्वारा
- बाल पंचायत – शिक्षिका, मधु जी द्वारा
- स्तरानुसार शिक्षण के मायने व दिगन्तर स्कूलों में व्यवस्था कैसे व क्यों ?
  – शिक्षक, घनश्याम जी द्वारा
- दिगन्तर स्कूलों में प्रकाशित बाल पत्रिका बातूनी व न्यूज लेटर के संदर्भ में
  – शिक्षिका, विजयता जी द्वारा
- विद्यालय व समुदाय के बीच रिश्ता
  – समन्वयक, नौरतमल जी द्वारा
- दिगन्तर में शिक्षकों के विकास में प्रशिक्षण, शेयरिंग और महासभा की भूमिका – समन्वयक, हेमन्त जी द्वारा

- दिगन्तर का परिचय और उसके दर्शन का प्रस्तुतिकरण – समन्वयक, ऋति जी द्वारा
- नई शिक्षानीति 2020 पर दिगन्तर के सचिव प्रोफेसर रोहित धनकर के साथ विस्तार से बातचीत हुई और नई शिक्षानीति के विभिन्न पहलुओं को समझा गया। यह चर्चा काफी महत्वपूर्ण रही।

3.10 बच्चों की शैक्षिक प्रगति रपट

दिगन्तर विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा प्रत्येक 6 माह में और वर्ष में दो बार बच्चों की शैक्षिक प्रगति रपट लिखी जाती हैं। शिक्षकों द्वारा सतत मूल्यांकन के आधार पर बच्चों की समग्र प्रगति का आंकलन इस रपट में किया जाता है। जिसमें विषयवार शैक्षिक समझ के अतिरिक्त बच्चे की रुचि, जिज्ञासा, समय पालन, साथियों के प्रति संवेदनशीलता, विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना, विद्यालय तथा परिवार में व्यवहार इत्यादि का उल्लेख होता है। चूंकि इस सत्र में बच्चों के साथ अधिकतर कार्य ऑनलाइन किया गया अतः शिक्षकों ने बच्चों को जो भी कार्य ऑनलाइन शिक्षण में करवाया एवं बच्चों के सीखने का जो वे निरन्तर अंकन करते रहे उसी के आधार पर मई व दिसम्बर माह में प्रगति रपट लिखी गई हैं। मई माह की प्रगति रिपोर्ट में तो बच्चों के साथ 15 जनवरी से 22 मार्च तक विद्यालय में किये गये कार्य को रेखांकित किया गया था, लेकिन दिसम्बर माह की रपट में बच्चों द्वारा ऑनलाइन किये गये शिक्षण कार्य के आधार पर तैयार की गई है। यह रपट बच्चे के व्यक्तित्व को दर्शाती है। शिक्षकों द्वारा तैयार इस प्रकार रपट बच्चों के साथ भविष्य में काम करने लिए महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि इससे बच्चे की रुचि, जिज्ञासा, व्यवहार और अकादमिक समझ को ध्यान में रखकर उनके आगे की दिशा तय करने में मदद करती है।

3.11 समुदाय के साथ संवाद

दिगन्तर विद्यालय में आस–पास की लगभग 25 ढाणियों एवं राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड की इन्दिरा गांधी नगर आवासीय योजना से बच्चे पढ़ने आते हैं। विद्यालय शिक्षक हर माह अपने समूह के प्रत्येक बच्चे के घर जाकर उसके अभिभावकों से बच्चे की प्रगति, परिवार और विद्यालय संबंधी बातचीत करते हैं। समय–समय पर अभिभावक एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य विद्यालय अवलोकन में बच्चों से भी बातचीत करते रहे हैं। इसके अलावा विद्यालय में समुदाय के साथ बैठकें करके विद्यालय की प्रगति और योजनाओं पर चर्चा होती थी, लेकिर इस सत्र में कोविड–19 के कारण न तो बच्चे स्कूल आ पाये और न ही शिक्षकों का समुदाय में जाना हो पाया। फिर भी टेलीफोन के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा अभिभावकों से संवाद करने की कोशिश की गई। इस सत्र के अन्त में फरवरी व मार्च माह में आवश्यक कारणों से शिक्षकों ने समुदाय में सम्पर्क कर बच्चों की ऑनलाइन कक्षा व शिक्षण सामग्री के संदर्भ में बातचीत की।

3.12 कार्मिकों का साक्षात्कार एवं चयन

दिगन्तर में नये कार्मिकों के चयन के लिए एक निश्चित प्रक्रिया है। जिसके अन्तर्गत संस्था में आवश्यकतानुसार कार्मिकों के लिए समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रकाशित की जाती है। विज्ञप्ति के बाद प्राप्त आवेदनों की योग्यतानुसार छंटनी की जाती है और साक्षात्कार में शामिल करने हेतु आमंत्रण पत्र भेजे जाते हैं। साक्षात्कार प्रक्रिया में लिखित कार्य, समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर चयनबोर्ड द्वारा उपयुक्त कार्मिकों का प्रशिक्षण/प्रोबेशन के लिए चयन किया जाता है।

इसी प्रक्रिया के तहत दिगन्तर विद्यालय में अंग्रेजी शिक्षक की जरूरत होने पर उसके चयन हेतु मार्च माह में दैनिक भास्कर समाचार पत्र में विज्ञप्ति प्रकाशित की गई। विज्ञप्ति के बाद केवल चार आवेदन आये, उनमें केवल दो ही योग्य थे, जिनको साक्षात्कार हेतु बुलाया गया। 15 मार्च 2021 में आयोजित साक्षात्कार में (निदेशक, कार्यक्रम समन्वयक, कम्यूनिकेशन समन्वयक और समुदाय समन्वयक) ने भाग लिया। लेकिन अपेक्षा अनुसार व्यक्ति नहीं मिलने के कारण इस साक्षात्कार में अंग्रेजी शिक्षक का चयन नहीं हो पाया।

3.13 बच्चों की पत्रिका बातूनी

दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों के लिए और बच्चों द्वारा निर्मित एक द्विमासिक पत्रिका ''बातूनी'' का प्रकाशन विगत 20 वर्षों से नियमित किया जा रहा है। इस पत्रिका में बच्चों द्वारा सृजित कहानियां, कविताएं, पहेलियां, बच्चों की बातचीत के अंश, बच्चों के अनुभव और अपनी बात आदि को स्थान दिया

जाता है। चूंकि दिगन्तर विद्यालयों में बच्चों को पढ़ने–लिखने के साथ कला और सृजनात्मक कार्य के लिए भी पर्याप्त अवसर मिलता है। इसलिए बच्चों द्वारा किये गये विशेष कार्यों को आपस में सांझा करने, उन पर चर्चाएं करने, सुझाव व समीक्षाओं के लिए उनकी रचनाओं को बातूनी में प्रकाशित किया जाता है और विद्यालय में प्रदर्शित भी किया जाता है। ताकि बच्चों का लेखन व रचनाओं के बारे में अधिक से अधिक संवाद हो पाए और उसके माध्यम से बच्चों की कल्पना, लेखन की रचनात्मकता में निखार को बढ़ावा मिले। इसी उद्देश्य के विस्तार हेतु बाल पत्रिका बातूनी का प्रकाशन किया जाता है। लेकिन इस बार कोविड–19 के कारण बच्चों का स्कूल में आना नहीं हो पाया अतः बातूनी का भी प्रत्येक दो माह में प्रकाशन नहीं हुआ। लेकिन ऑनलाइन प्रथम चरण के बाद कुछ समय के लिए उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए स्कूल खुले तो बच्चों से प्राप्त सामग्री से बातूनी का वार्षिक अंक प्रकाशित किया गया। जिसमें बच्चों ने कहानियां, कविताएं, पहेलिया व लॉकडाउन के दौरान अपने अनुभवों को साझा किया है।

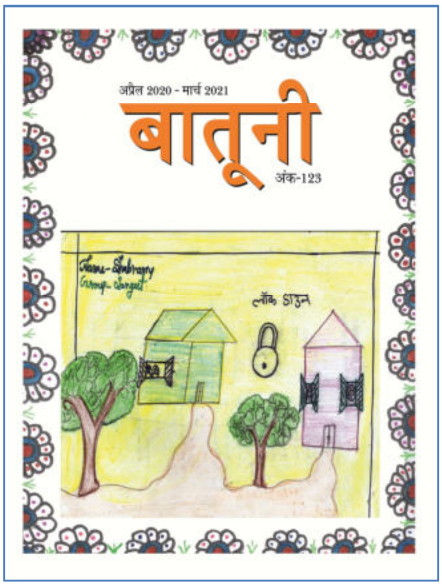

3.14 राष्ट्रीय पर्व

दिगन्तर विद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों को पूरे उत्साह और तैयारी के साथ मनाया जाता है। जिनमें इन पर्वों को मनाने का वास्तविक कारणों और जरूरत को ध्यान में रखते हुए बच्चों व शिक्षकों द्वारा पूरी तैयारी के साथ कार्यक्रम किये जाते हैं। इसीलिए प्रत्येक राष्ट्रीय पर्व को मनाने के लिए विद्यालय में एक माह पूर्व ही तैयारी शुरू कर दी जाती है। लेकिन इस में सत्र में 74वां स्वतंत्रता दिवस और 72वां गणतंत्र दिवस के अवसरों पर लॉकडाउन के कारण बगैर बच्चों के मात्र झण्डारोहण ही किया गया। फिर भी शिक्षकों ने स्वतंत्रता दिवस पर कुछ तैयारी करके झण्डारोहण के साथ–साथ एक गीत *"तेरी मिट्टी में मिलजावां'* का मंचन किया। जिसमें शिक्षक विवेक जी ने गीत गाया और बाकी साथियों ने कोराना वॉरियस एवं स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका को निभाते हुए विद्यालय मंच के पर प्रदर्शन के माध्यम से देशभर के कोराना वॉरियर का हौशला बढ़ाने की कोशिश की गई। लेकिन गणतन्त्र दिवस पर मात्र झण्डा रोहण ही किया गया। दिगन्तर के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि बगैर बच्चों के दोनों राष्ट्रीय पर्व मनाये गये।

3.15 अन्य संस्थाओं के साथ संवाद

दिगन्तर स्कूलों में पिछले कई वर्षों से इन्टर्नशिप हेतू दिल्ली की बी.एल.एड. कॉलेजों से छात्राओं के समूह आते रहे हैं। लेकिन इस बार कोविड–19 के कारण कोई भी समूह नहीं आ सका। परन्तु जीसस एण्ड मैरी और माता सुन्दरी कॉलेजों की ओर से ऑनलाइन इर्न्टनशिप के लिए प्रस्ताव जरूर आये। उनके प्रस्तावों के अनुसार निदेशक व समन्वयक समूह ने विचार विमर्श करके ऑनलाइन इन्टर्नशिप की पूरी रूपरेखा तैयार करके कॉलेजों को भेजा गया। लेकिन बजट पर सहमति नहीं बनने के कारण यह ऑनलाइन इन्टर्नशिप का कार्यक्रम नहीं हो पाये।

- ''आशा फोर एज्युकेशन'' संस्था की ओर से वर्तमान में दिगन्तर विद्यालयों को सबसे ज्यादा आर्थिक सहयोग प्राप्त है। अतः संस्था द्वारा उन्हें नियमित रूप से प्रगति रपट भेजना और समय–समय पर अन्य कार्यक्रमों की जानकारी साझा करने के लिए उनके साथ संवाद जारी रहा।
- I.C Trust व Savitri Puranmal Charitable Trust जो कि दिगन्तर स्कूलों में आंशिक वित्तीय सहयोग कर रहे हैं, उनके कार्यक्रम की प्रगति साझा करना और रपट भेजने संबंधित संवाद जारी रहा।
- **बेवीनार में शामिल होना** : 15 जुलाई, 2020 को State Level Webinar On Recent Guidelines Released By Government Of Rajasthan Debarring Children's (Pre-Primary age) Right To Get Benefit Of 25% Reservation in Private Schools Confirmation में दिगन्तर विद्यालय से समन्वयक शामिल हुये। इसमें की गई चर्चा को समझा व अपने विचार रखे गये।

- 7 अक्टूबर 2020 को मिस्टर आनन्द के साथ Execution पर तैयार की गई वीडियों के संदर्भ में एक ऑनलाईन बैठक की गई। इस बैठक में निदेशक व समन्वयक शामिल रहे। वीडियो देखने के बाद लगा कि अभी इस पर और कार्य की जरूरत है अतः हम इनके बारे में इनके साथ आगे जुड़ेंगे।
- दिल्ली के जीसस एण्ड मैरी और माता सुन्दरी कॉलेजों की ओर से ऑनलाइन इन्टर्नशिप के लिए प्रस्ताव जरूर आये। जिसको लेकर निदेशक और अकादमिक समन्वयक समूह की दो ऑनलाइन बैठकों का आयोजन हुआ, जिनमें निम्न मुद्दों पर बातचीत कर निर्णय लिए गये।
  - ऑनलाइन इन्टर्नशिप हेतु कंटेन्ट क्या हो सकते हैं ? इसकी सूची तैयार करना।
  - ऑनलाइन इन्टर्नशिप कितने दिन व समय का हो ? साथ ही वह समय कब से कब तक हो ?
  - इन्टर्नशिप के दिन व समय को दिगन्तर की गतिविधि कलैण्डर के अनुसार तय करना।
  - संभावित इन्टर्नशिप के लिए आवश्यक सामग्री, जैसे फोटो व वीडियो का चयन करना।
  - इस इन्टर्नशिप में फैकल्टी के तौर पर निदेशक, स्कूल शिक्षक और समन्वयक शामिल होंगे।
  - ऑनलाइन इन्टर्नशिप के लिए बजट को विचार विमर्श के बाद तय किया गया।
- 15 दिसम्बर 2020 को दिल्ली की संस्था ''कथा'' द्वारा एक ऑनलाइन रिडिंग पोर्टल लॉन्च किया गया। जिसमें दिगन्तर की ओर से सभी शिक्षक व समन्वयक शामिल रहें।
- 12 फरवरी, 2021 को उड़ान फाउण्डेशन से दो लोग विद्यालय आये। इन्होंने आकार संस्था के सहयोग से प्राप्त सैनेटरी पैड विद्यालय की कुल 82 लड़कियों को वितरित किये गये।

3.16 ऑनलाइन दस्तावेजीकरण

- 10वीं बोर्ड की परीक्षा 2020 दे रहे बच्चों के सत्रांक BSER Portal पर Online भरकर Lock किया गया तथा BSER Portal से ही Lock Sessional Marks की कॉपी डाउनलोड की गई।
- Rajasthan Private School Portal (PSP Portal) पर Pri-Primary to Secondary Class तक के बच्चों को सत्र : 2020–21 हेतु प्रमोट किया गया तथा Promote Student's के Certificate डाउनलोड कर बच्चों को दिये गये।
- BSER Portal पर बच्चों की 10वीं बोर्ड वार्षिक परीक्षा 2021 के आवेदन पत्रों को Online भरकर Lock किया गया तथा BSER Portal से ही Lock Exam Form की कॉपी डाउनलोड कर जमा फीस चालान सहित हार्डकॉपी नॉडल केन्द्र पर जमा करवाई गई।
- Rajasthan Private School Portal (PSP Portal) पर निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत एंट्री कक्षा में प्रवेश हेतु दोनों विद्यालयों की प्रोफाईल भरकर RTE विज्ञप्ति तैयार की गई।
- National Scholarship Portal पर सत्र : 2020–21 के लिए विद्यालय प्रोफाईल Update किये तथा जिन बच्चों ने स्कॉलरशिप के आवेदन आये हैं उनको Portal पर चैक कर Verified करने का कार्य किया गया। इस बार कुल 24 बच्चों के स्कॉलरशिप आवेदन Verified किये गये।

- Rajasthan Private School Portal (PSP Portal) पर बच्चों के विवरण को अपडेट की 8वीं बोर्ड वार्षिक परीक्षा 2021 के आवेदन पत्र Online भरकर Lock किया गया।
- दिगन्तर के वर्ष 1989 से अब तक के कार्मिकों का रिकॉर्ड कम्प्यूटर में तैयार किया गया, इस रिकॉर्ड कार्मिकों का कार्य प्रारम्भ व कार्य समापन सहित अन्य जानकारियों की सूची बनाकर एक्सल शीट में कार्मिकों का डेटा भरने का कार्य किया गया।
- Consolidated Manyata Module के तहत Rajpsp Portal पर एकीकृत मान्यता आवेदन पत्र में विद्यालय प्रोफाईल भरकर लॉक किया गया, इसमें अभी विद्यालय सोसाइटी व मान्यता विवरण भरने का कार्य बाकी है।
- Department of Science and Technology, Government of India के कार्यक्रम INSPIRE awards - MANAK Scheme में दिगन्तर विद्यालय से 5 बच्चों का Registration किया गया तथा Science and Technology से संबंधित बच्चों के Ideaes को Uplod किया गया।

3.17 कोरोना काल में सहयोग/मदद

इस वर्ष देश में कोरोना महामारी के कारण लगातार लॉकडाउन से गरीब और असहाय लोगों के लिए अपने जीवन को बचाये रखना भी काफी मुश्किल भरा काम हो गया है। संकट यहां तक पैदा हो चुके हैं कि उनको दो वक्त का खाना मिलना भी काफी मुश्किल हो रहा है। सरकारें अलग–अलग तरह से मदद करने का प्रयास कर रही हैं लेकिन यह सब पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इसलिए सरकार की ओर से भी इन गरीब एवं असहाय लोगों की मदद करने के लिए संस्थाओं एवं व्यक्तिगत रूप से भी आगे आकर सहयोग की अपील की गई।

सरकारी अपील और क्षेत्र के गरीब व असहाय लोगों में ऐसे हालातों को देखते हुए हमारी संस्था ने विचार विमर्श करके तय किया कि हमें भी ऐसे लोगों की मदद के लिए आगे आना चाहिए। क्योंकि हमारे द्वारा क्षेत्र में किये गए एक छोटे से सर्वे में पाया कि संस्था के आस–पास विभिन्न कंस्ट्रकशन में काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर और कचरा बीन कर अपना जीवन यापन करने वाले परिवार खाली प्लॉटों में तम्बू बनाकर रहते हैं। जिनका लॉकडाउन के चलते काम बन्द हो गया था। जिसके कारण इनके लिए दो वक्त खाने का भी संकट पैदा हो गया था। हमने ऐसे परिवारों की शीघ्र मदद के लिए कुछ संस्थाओं से आर्थिक मदद हेतु बात की क्योंकि दिगन्तर में शैक्षणिक कार्यों के अलावा इस प्रकार के कार्यों के लिए कोई फण्ड नहीं होता है।

अतः इस सहयोग के लिए Abercrombie & Kent Philanthropy संस्था की ओर से सैद्धांतिक सहमति मिली। क्योंकि यह संस्था पिछले कई वर्षों से शैक्षणिक कार्यों हेतु वित्तीय सहयोग के रूप में दिगन्तर के साथ जुड़ी हुई है इसलिए उन्हें लगा कि वास्तव में दिगन्तर उन लोगों की मदद कर सकती है जिनको प्रतिदिन दो वक्त का खाना भी मिलना मुश्किल हो रहा है।

अंततः हमारे उपरोक्त विचार से सहमति रखते हुये Abercrombie & Kent Philanthropy ने लगभग 74 हजार रुपये की वित्तीय मदद स्वीकृत की, जिसके द्वारा हमने लगभग 245 परिवारों को राहत सामग्री मुहैया करवाई गई। इसके लिए दिगन्तर कार्मिकों ने मिलकर दो–तीन दिन में पैकिट तैयार किये। जिसके बाद निदेशक के दिशा निर्देश के अनुसार उन गरीब व असहाय परिवारों के तम्बों वाले घरों पर जाकर सामग्री के पैकिटों का वितरण किया गया। राहत सामग्री में उन्हें आटा, दाल, तेल, मशाले, साबुन आदि दिया गया, जिसके कारण उन परिवारों को लगभग एक सप्ताह के लिए दो समय का खाना मिल पाया।

हमारे द्वारा उपरोक्त प्रपोजल के साथ ही Abercrombie & Kent Philanthropy संस्था को लॉकडाउन के बाद दिगन्तर विद्यालयों में साफ–सफाई और सेनेटाइजेशन के लिए आवश्यक वित्तीय सहयोग हेतु एक दूसरा प्रपोजल भेजा गया। बच्चों की सुरक्षा के लिए भेजे गए इस प्रस्ताव को भी इस संस्था ने स्वीकार करते हुए हमें 200$ डॉलर का सहयोग करने की सैद्धातिक सहमति प्रदान की।

दूसरे प्रपोजल के अनुसार प्राप्त वित्तीय सहयोग का हमारे द्वारा स्कूल खुलने पर विद्यालयों की साफ–सफाई और सेनेटाइजेशन में उपयोग किया गया।

3.18 उपलब्धियां

- Department of Science and Technology, Government of India के कार्यक्रम INSPIRE awards - MANAK Scheme में दिगन्तर विद्यालय से 5 बच्चों के Science and Technology से संबंधित Ideaes भेजे गये थे। हमें यह बताते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि इनमें से तीन बच्चों के आइडिया का चयन हुआ है। जिनमें एक बालिका कक्षा 9वीं व दो बालिकाएं कक्षा 10वीं के स्तर की हैं। अब इन बच्चों द्वारा अपने आइडिया प्रोजेक्ट के प्रस्तुतिकरण के लिए मॉडल तैयार किये जा रहे हैं। जिसे जिला स्तर पर आयोजित होने वाली प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया जाएगा। बालिकाओं के चयन हुये तीन प्रोजैक्ट निम्न हैं।

DEPARTMENT OF SCIENCE & TECHNOLOGY
राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान – भारत
National Innovation Foundation - India
inspire awards - manak
million minds augmenting national aspiration and knowledge
Certificate of Award

INSPIRE Reference No. 20RJ1922136 — Dated: 16 Dec 2020

This is to certify that Ku. SHABNAM BANO D/o of Smt./Sh. SANWAR KHAN, student of Class 10th from DIGANTAR VIDYALAYA, District Jaipur of Rajasthan has been selected for an INSPIRE Award of Rs. 10000/- (Rupees Ten Thousand Only) for the year 2020-21 for preparation of Science project / model and to participate in the District Level Exhibition & Project Competitions (DLEPCs) to be organized by the District Education Authority.

(Sandeep Bansal)
Scientist
Department of Science & Technology

  - Waste paper is weighing spoon /pot cukuk
  - फोल्डेड मास्क/अल्ट्रा सेंसर युक्त मास्क
  - सिंक के गंदे पानी का सदुपयोग

- Abercrombie & Kent Philanthropy संस्था के आर्थिक सहयोग से कोरोनाकाल में 245 गरीब व असहाय परिवारों को एक सप्ताह की खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने में हम सक्षम हो पाये। इसके अलावा इसी संस्था के आर्थिक सहयोग से बच्चों को साफ–सफाई एवं सेनेटाइजेशन से युक्त विद्यालय मुहैया करा सके।

- इस सत्र में लॉकडाउन के बावजूद भी हमने बच्चों को घर पर ही ऑनलाइन शिक्षण कार्य करवाया, जिससे कि बच्चों के शैक्षिक स्तर को निरन्तर आगे बढ़ने में मदद मिली। इसके अलावा हमारे शिक्षकों ने शिक्षा के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते बच्चों के लिए काफी शिक्षण सामग्री विकसित की गई। यह शिक्षण सामग्री भविष्य में शिक्षकों द्वारा बच्चों के साथ किये जाने वाले शिक्षण कार्य में तो मददगार रहेंगी ही, लेकिन वर्तमान में स्वयं शिक्षकों का क्षमतावर्द्धन करवाने में भी काफी मददगार साबित हुई है।

- दिगन्तर विद्यालयों में कला शिक्षण पर शुरुआत से ही फोकस रहा है, हमारा मानना है कि कला के माध्यम से बच्चों को दुनिया को समझने और हस्तकौशल के साथ सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। हम बच्चों को अकादमिक शिक्षण के साथ कला शिक्षण का कार्य भी करवाते हैं। अतः शिक्षकों ने अपनी कलात्मक क्षमताओं का उपयोग करते हुये सभी शिक्षकों ने मिलकर लॉकडाउन में विद्यालय के सौन्दर्यकरण पर कार्य किया। जिसमें समूह (कक्षा–कक्षों) के सामने की दीवारों पर देश के कई राज्यों के प्रसिद्ध माण्डणों का चित्रण किया गया। इससे दिगन्तर विद्यालय के सौन्दर्यकरण में चार चांद लग गये।

3.19 निर्माण संबंधी कार्य

इस वर्ष दिगन्तर विद्यालयों में कोई खास निर्माण कार्य तो नहीं हो पाया, लेकिन कोविड–19 के बाद विद्यालय खुलने पर सुरक्षा नियमों के अनुसार बच्चों एवं कार्मिकों को बार–बार हाथ धोने के लिए पानी के नलों की आवश्यकता को महसूस करते हुए निदेशक एवं समन्वयक समूह के विचार विमर्श के बाद विद्यालय भवन के बाहर दीवार पर पर्याप्त दूरी पर कुल 20 पानी के नये नल लगवाये गये।

3.20 चुनौतियां या समस्याएं

- कोविड–19 महामारी के कारण इस शैक्षणिक सत्र में प्राथमिक स्तर तक के बच्चे एक दिन भी स्कूल नहीं आ पाये और न ही उनके साथ ऑनलाइन या अन्य तरीके से शिक्षण कार्य हो पाया।
- उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के बच्चे भी बहुत कम समय के लिए ही स्कूलों में आए और इसके अलावा इन बच्चों की भी शिकायत रही है कि जो ऑनलाइन शिक्षण करवाया गया वह पर्याप्त नहीं है।
- अंग्रेजी शिक्षक के लिए अखबार में विज्ञप्ति दी और साक्षात्कार प्रक्रिया के बावजूद भी उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिल पाया, जिसके कारण इस वर्ष उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण कार्य प्रभावित रहा।

- दिगन्तर विद्यालयों को अब तक आई.सी.ट्रस्ट और सावत्री पीरामण्डल संस्थाओं द्वारा जो आर्थिक सहयोग आंशिक रूप से मिल रहा था वह कोराना महामारी के 50 प्रतिशत ही रह गया अतः विद्यालय संचालन में नई आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- बच्चों को सीखने–सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली काफी गतिविधियां जो हर वर्ष विद्यालय स्तर पर आयोजित की जाती थी, वह सब भी इस महामारी के कारण संभव नहीं हो पाई। जिसके कारण बच्चों के शैक्षिक प्रगति में काफी नुकसान हुआ है।

3.21 आगामी योजना व लक्ष्य

- सरकारी गाइडलाइन अनुसार महामारी से बचने के उपायों सहित स्कूलों का संचालन करना।
- नई शिक्षा नीति 2020 और राज्य सरकार के निर्देशानुसार विद्यालयों का बेहतर संचालन करना।
- प्राथमिक व उच्च प्राथमिक के अनुसार माध्यमिक स्तर के लिए भी शिक्षाक्रम विकसित करना।
- बच्चों के लिए बच्चों की द्विमासिक पत्रिका बातूनी का नियमित प्रकाशन करना।
- दिगन्तर विद्यालयों में आवश्यकतानुसार आस–पास के सम्पन्न परिवारों के बच्चों की बजाय अन्य स्थानों के जरूरतमंद परिवारों के बच्चों और विशेषकर लड़कियों को प्रवेश में प्राथमिकता देना।
- उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए अंग्रेजी का उपयुक्त शिक्षक तलाश कर उनका प्रशिक्षण करना।
- विद्यालय में आवश्यक विकास कार्यों के लिए आर्थिक सहयोगकर्ताओं को तलाशना।
- आगामी सत्र हेतु गतिविधियों का वार्षिक कलैण्डर तैयार कर, उसके अनुसार गति प्रदान करना।
- कलेण्डर अनुसार शिक्षकों के क्षमतावर्द्धन हेतु कार्यशालाओं व शेयरिंग बैठकों आयोजन करना।
- ऑनलाईन इन्टर्नशिप एवं प्रशिक्षण का मॉड्यूल तैयार करना।

❑❑❑

4. शिक्षा विमर्श

दिगन्तर ने 1990 के दशक में लगभग एक दशक तक प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में वैकल्पिक तरीके से स्कूल चलाने के दौरान अनुभव किया कि देश में बड़ी संख्या में हिंदी बोलने वाले लोगों के बावजूद हिंदी में अच्छे शैक्षिक साहित्य और पत्रिकाओं की कमी है। इस रिक्तता को भरने और शैक्षिक संवाद शुरू करने के लिए शिक्षा विमर्श को प्रकाशित करने का विचार अस्तित्व में आया।

मार्च 1998 में शिक्षा विमर्श का प्रकाशन करना शुरू किया। उस वक्त भारतीय शिक्षा प्रणाली में तेजी से बदलाव हो रहे थे। सरकारी और गैर–सरकारी संगठन हर बच्चे तक पहुंचने और उन्हें शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रयास कर रहे थे। इस उद्देश्य के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा कई प्रकार के स्कूल स्थापित किए गए थे। इस अवधि के दौरान पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षाशास्त्र, शिक्षकों के ज्ञान और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर कई महत्वपूर्ण सवाल उठाए जा रहे थे।

प्रारंभ में दो वर्षों के लिए यह पत्रिका मासिक आधार पर प्रकाशित की गई थी, लेकिन 2001 के बाद से इसे द्वि–मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाता रहा है। वित्तीय सहायता के संदर्भ में कई उतार–चढ़ाव के बावजूद 23 वर्षों की अवधि के दौरान शिक्षा विमर्श का प्रकाशन जारी है। शिक्षा विमर्श में 14 विशेषांकों सहित अब तक कुल 120 अंक प्रकशित हो चुके हैं।

शिक्षा विमर्श का प्रकाशन इस धारणा पर आधारित है कि शिक्षा न तो केवल सिद्धांत पर आधारित हो सकती है और न ही कर्म (शैक्षिक अभ्यास)। शिक्षा के क्षेत्र में सिद्धांत और अभ्यास के बीच निरंतर संवाद की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कि शिक्षा में सिद्धांत और जमीनी अनुभवों के बीच संश्लेषण को स्थापित करने की आवश्यकता है। शिक्षा विमर्श ने पिछले 23 वर्षों के दौरान हिंदी में गंभीर शैक्षिक साहित्य का संकलन किया है। इसने शैक्षिक नीतियों, पाठ्यक्रम सिद्धांतों, शिक्षाशास्त्र पर महत्वपूर्ण साहित्य का प्रकाशन किया है और पाठकों के साथ जमीनी अनुभव भी साझा किए हैं।

4.1 पत्रिका की पहुंच और योगदान

शिक्षा विमर्श के पाठकों में शिक्षक, शिक्षक–शिक्षा से जुड़े लोग, शैक्षिक कार्यकताओं के अलावा देशभर से सरकारी, गैर–सरकारी शैक्षणिक संस्थान और शोधार्थी शामिल हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उपयोग सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों, सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में लगातार किया जाता रहा है। शिक्षा विमर्श में प्रकाशित लेखों का उपयोग शिक्षकों और छात्रों द्वारा हिंदी भाषी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में भी किया जाता रहा है।

पत्रिका का एक प्रमुख योगदान यह भी है कि अनुवाद के माध्यम से भी हिंदी में नवीनतम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित शैक्षिक आलेख पाठकों को उपलब्ध करवाती रही है।

4.2 प्रचार–प्रसार और सदस्यता

शिक्षा विमर्श का विभिन्न फंडिंग संगठनों के आर्थिक सहयोग से प्रकाशन होता रहा है। लेकिन अप्रैल 2018 के बाद से कोई वित्तीय सहयोग नहीं मिला, लेकिन अर्थिक संकटों के बावजूद प्रकाशन जारी रखा। दिगन्तर शिक्षा विमर्श के लिए आर्थिक सहयोग जुटाने हेतु निरंतर प्रयासरत है। वर्ष 2015 से शिक्षा विमर्श ने अपने लिए धन जुटाने के लिए पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करना भी शुरू किया है। मई–जून, 2019 अंक के बाद से संपादक का पद भी रिक्त है। इसलिए पत्रिका का प्रकाशन गम्भीर रूप से बाधित हुआ है।

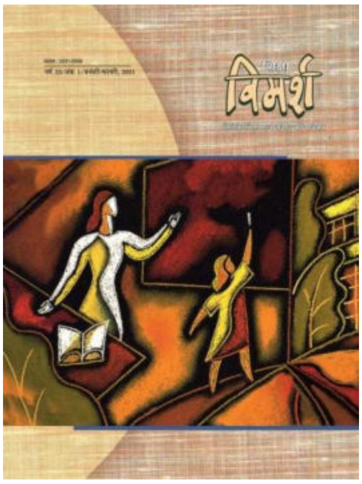

जनवरी–फरवरी, 2021

कुछ स्वैच्छिक लेखक व संपादनकताओं के सहयोग से मार्च, 2020 में शिक्षा विमर्श का जुलाई–अगस्त, 2019 अंक प्रकाशन कर पाये कि कोरोना महामारी के कारण पुनः रुक गया। लगभग एक वर्ष बाद जनवरी, 2021 में आठ अंकों का ब्रेक के बाद जनवरी–फरवरी, 2021 का अंक प्रकाशित किया गया।

इस वित्तीय वर्ष के दौरान प्रसार और सदस्यता की स्थिति निम्नानुसार है –

प्रकाशित अंक (माहवार)	बन्द[1] सदस्य	रिन्यू/पुनःशुरू[2] सदस्य (±)	नये जुड़े सदस्य	पाठक प्रतियां	APF को भेजी प्रतियां	कुल[3] भेजी प्रतियां
जनवरी–फरवरी, 2021	0	00	26	524	470	**994**
मार्च–अप्रैल, 2021	यह अंक प्रकाशन की प्रक्रिया में है...					------

1 जो सदस्यता लंबे समय से नवीनीकृत नहीं हुई हैं, उन्हें प्रकाशन पुनः आरम्भ की सूचना देने और नवीनतम अंक नवीनीकरण करवाने की सूचना देने के लिए चालू रखा गया है।

2 नियमित नवीनीकरण और पुनः शुरू की सदस्यता को फिर से शुरू करने वाले सदस्य।

3 वर्तमान अंकों की बिक्री के कुल सदस्यों की संख्या।

वर्ष 2020–21 के दौरान शिक्षा विमर्श के कुल चार अंक प्रकाशित हुए हैं। इस वित्तीय वर्ष के दौरान, पत्रिका ने कुल 55,880 रुपये की राशि सदस्यता, नवीनीकरण और अंक बेचकर प्राप्त की है। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन ने इस बार जनवरी–फरवरी, 2021 अंक की 472 प्रतियां खरीदी हैं। इसके अलावा पत्रिका के कुछ पुराने संस्करणों का भी बेचान किया गया है।

4.3 विमर्श टीम द्वारा स्कूल कार्यक्रम में सहयोग

कोरानाकाल के दौरान कुछ समय तक शिक्षा विमर्श का प्रकाशन बाधित रहा। उक्त समय में शिक्षा विमर्श टीम के एक मात्र कार्मिक प्रसार–प्रबंधक द्वारा अपनी व साथियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये घर से ही दिगन्तर के अन्य कायक्रमों में अलग–अलग तरह से कार्य कर सहयोग किया गया, जिसमें अधिकतर कार्य दिगन्तर विद्यालयों में तैयार सामग्री की टाईपिंग, फोरमेटिंग, डिजाइन, प्रूफ रीडिंग आदि कार्य किया गया – इनके द्वारा किये गये कार्यों का संक्षिप्त में विवरण इस प्रकार हैं।

1. दिगन्तर की वार्षिक रिपोर्ट 2018–19 की फोरमेटिंग व डिजाइन का कार्य किया गया।
2. दिगन्तर स्कूल के बच्चों की पत्रिका बातूनी के दो अंक (122 व 123) की डिजाइन तैयार की गई।
3. दिगन्तर शिक्षकों द्वारा तैयार कुल 8 प्रोजेक्ट पुस्तिकाओं की प्रूफ रीडिंग व डिजाइन तैयार की गई।
4. कोरोना काल में दिगन्तर शिक्षकों द्वारा तैयार की गई शिक्षक सहायक पुस्तिकाओं, सृजनात्मक कार्य की 6 पुस्तिकाओं और प्रत्येक शिक्षक की एक–एक अनुभव पुस्तिकाओं की टाईपिंग, प्रूफ रीडिंग, फोरमेटिंग करके बुकलेट तैयार करने का कार्य किया गया।

5. फाउण्डेशन कोर्स के लिए आवश्यक लेखों के फोंट बदलाव, फोरमेटिंग और डिजाइन तैयार किया।
6. दिगन्तर कार्यलय में आवश्यकतानुसार नियमित रूप से कम्प्यूटर द्वारा पत्र, नोटिस, सूचना, फोरमेट आदि तैयार किये गये और कार्यालय में आने वाले टेलिफोनों के जवाब दिया गया।

4.4 समस्याएं एवं चुनौतियां

- शिक्षा विमर्श को अप्रैल 2018 के बाद से कोई वित्तीय सहायता नहीं मिलने के कारण पत्रिका का नियमित प्रकाशन करने में रहा आर्थिक संकट अभी तक बरकरार है।

- शिक्षा विमर्श में मई–जून, 2019 अंक के बाद से संपादक का पद रिक्त है और स्वैच्छिक लेखक/संपादनकर्ताओं के सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन समय पर होना काफी मुश्किल भरा काम है।
- हिंदी में अकादमिक लेखन की गुणवत्ता की स्थिति ज्यादातर शिक्षा विमर्श पत्रिका की अपेक्षा अनुरूप नहीं होती हैं और प्राप्त लेख कम ही पत्रिका की गुणवत्ता को पूरा करते हैं। इसलिए पत्रिका काफी हद तक अंग्रेजी में लिखे लेखों के अनुवाद पर भी निर्भर रहती है।
- शिक्षा विमर्श के प्रकाशन और अनुवाद के भुगतान को ही पूरा करने के लिए भी आर्थिक तौर पर काफी समस्याएं आ रही हैं। दूसरी तरफ अनुवादक अनुवाद की दर बढ़ाने की लगातार मांग कर रहे हैं। उच्च दर के अभाव में कई अच्छे अनुवादकों ने अनुवाद के लिए भी इनकार कर दिया है।
- गुणत्तापूर्ण मूल लेखों के शाब्दिक अर्थ काफी चुनौतिपूर्ण होते हैं और इनके पुनः ट्रांस–क्रिएशन में भी बहुत अधिक समय लगता है, जिसके लिए भी पत्रिका में पूर्ण कालीन संपादक का होना जरूरी है।

❑❑❑

5. संदर्भ सहायता इकाई

हमारा मानना है कि किसी भी कार्यक्रम के सफल संचालन में उसकी प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक व्यवस्था का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए दिगन्तर में संचालित सभी कार्यक्रमों के सफल संचालन के लिए एक इकाई है जिसे हम संदर्भ सहायता इकाई के नाम से पहचानते हैं। यह इकाई समस्त कार्यक्रमों को प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक मदद मुहैया कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस इकाई के अन्तर्गत मुख्य रूप से निम्न युनिट काम करते हैं।

- लेखा एवं वित्तीय प्रबंधन
- स्टोर प्रबंधन
- पुस्तकालय संचालन
- कैम्पस सुरक्षा व मैस व्यवस्था

5.1 लेखा एवं वित्तीय प्रबंधन

इस सत्र में कोरोनाकाल में लॉकडाउन ने दिगन्तर के सभी कार्यक्रमों को काफी हद तक प्रभावित किया है। लेकिन लेखा शाखा ने अपना कार्य नियमित रूप से और समय पर क्रियान्वित किया है। इस शाखा का मुख्य कार्य संस्था के सभी प्रकार के आय–व्यय का हिसाब रखना है, जिसमें संस्था एवं कार्मिकों का टैक्स आयकर अधिनियमों के अनुसार काटना और विभाग में समय पर जमा करवाना, संस्था के कार्मिकों का नियमानुसर नियमित वेतन बनाना, समस्त आय–व्यय का रिकॉर्ड रखना और संस्था द्वारा आवश्यक पत्राचार करना आदि कार्यों का नियमित रूप से क्रियान्वयन हुआ है। इनकी सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

5.2 स्टोर प्रबंधन

संदर्भ सहायता इकाई में एक महत्वपूर्ण युनिट सामग्री भण्डारण है। इस यूनिट द्वारा सभी कार्यक्रमों एवं अन्य संस्थाओं की आवश्यकताओं के लिए सामग्री प्रिन्ट करवाना, भेजना, बाजार से नई सामग्री खरीदना और उनका अच्छी तरह से रख–रखाव करना आदि कार्य किये जाते हैं। कोरोनाकाल के दौरान भी इस यूनिट द्वारा बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण करवाने के लिए राजस्थान पाठ्यपुस्तक मण्डल से किताबें खरीदी गई एवं अन्य संस्थाओं की मांग के अनुसार प्रकाशन सामग्री को प्रिंट करवाकर भेजा गया और संस्था में समय–समय आवश्यक नई सामग्री की खरीददारी की गई। इस सत्र में अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, गुडवीव इण्डिया, दुर्गा देवी चैरिटेबिल ट्रस्ट और आधारशिला बिलासपुर छत्तीसगढ को कुल 1,13,276 रुपये की

प्रकाशन सामग्री भेजी गई। इसके अलावा आवश्यक स्टोक बनाये रखने के लिए 10 पुस्तकों के सैट की एक हजार प्रतियां यानी कुल 10,000 पुस्तकें प्रिन्ट करवाई गई और हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्टोर की स्थाई सामग्री का भौतिक सत्यापन का कार्य भी किया गया है।

5.3 पुस्तकालय संचालन

दिगन्तर में एक मुख्य पुस्तकालय है, जिसमें किताबों की खरीद कर उन्हें रजिस्टर में इन्द्राज करना एवं कार्यकर्ताओं के लिए नियमित लेन देन का कार्य किया गया। इसके अलावा दिगन्तर के अन्य कार्यक्रमों से आई पुस्तकों की सूची तैयार कर उन्हें पुस्तकालय के रजिस्टर में इन्द्राज किया गया और हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी पुस्तकालय की समस्त पुस्तकों का भौतिक सत्यापन का कार्य किया गया।

5.4 कैम्पस सुरक्षा व मैस व्यवस्था

दिगन्तर का अपना एक बड़ा–सा मुख्य कैम्पस है और उसी में एक मैस की भी व्यवस्था है, जहां वर्तमान में तीन व्यक्ति कार्यरत हैं। उनमें से एक व्यक्ति कैम्पस प्रभारी हैं जो सम्पूर्ण कैम्पस की देखभाल के साथ–साथ मेहमानों के आवास व खाने की व्यवस्था और मैस का संचालन भी करता है और दो व्यक्ति उनकी मदद के लिए कार्यरत हैं। वैसे तो इस बार पहले की तरह मेहमानों का दिगन्तर कैम्पस में आना नहीं हो पाया। फिर भी संस्था के ही एक–दो व्यक्ति जो फाउण्डेशन ऑफ एज्यूकेशन कार्यक्रम से जुड़े रहे हैं, उन्हीं के लिए नियमित रूप से कैम्पस प्रभारी द्वारा मैस का संचालन किया गया। इसके अलावा दोनों साथी कार्मिकों ने कैम्पस में बागवानी, कार्यालय कार्यों में सहयोग, चौकीदारों की अनुपस्थिति में चौकीदारी का कार्य और कैम्पस की साफ–सफाई को बेहतर तरीके से संचालित किया।

5.5 अन्य गतिविधियां

- संदर्भ सहायता इकाई में उपरोक्त कार्यों के साथ–साथ इस बार एक और महत्वपूर्ण कार्य ''कार्मिकों के रिकॉर्ड को कम्प्यूटराइज्ड'' किया जा रहा है, जिसमें दिगन्तर में अब तक जितने भी कार्मिक आये हैं उनकी हार्ड फाइलों से डेटा लेकर सॉफ्टकॉपी में दर्ज की जा रही हैं। यह कार्य एक स्तर पर तो पूरा गया है, लेकिन इसे अन्तिम रूप देना अभी शेष है।
- संदर्भ सहायता इकाई की सभी यूनिटों की नियमित रूप से एक बैठक आयोजित की जाती है, जिसमें इस इकाई के सभी कार्मिकों के अलावा संस्था निदेशक भी शामिल होती हैं। यह बैठक इस इकाई के कार्यों को बेहतर दिशा देने के साथ–साथ संस्था के लिए सामुहिक रूप से कार्य करने

को लेकर प्रेरित करती है। इस सत्र में कुछ बैठकें तो ऑफलाइन हुई लेकिन अधिकतर बैठकें ऑनलाइन ही की गई।

5.6 समस्या एवं चुनौतियां

वर्तमान में यह देखने में आ रहा है कि सीएसआर के तहत आर्थिक सहयोग करने वाली संस्थाएं (अधिकतर कॉर्पोरेट) ऐसी इकाइयों को कम उपयोगी मानती है अतः आर्थिक सहयोग के लिए आगे नहीं आ रही हैं। इसलिए दिगन्तर की यह इकाई पिछले कुछ वर्षों से गम्भीर आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही है। फिर भी अन्य कार्यक्रमों की सफलता में इस यूनिट की उपयोगिता के आधार पर वित्तीय सहयोग के प्रयास कर रहे हैं लेकिन अभी तक हमें इसमें कोई खास सफलता नहीं मिल पाई है।

❑❑❑

6. अकादमिक संदर्भ इकाई

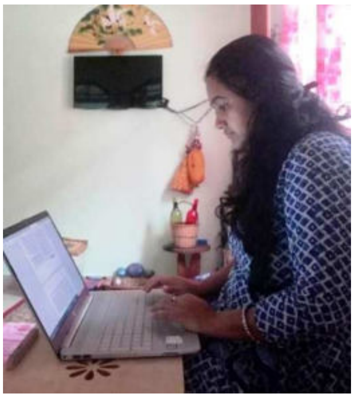

दिगन्तर अपनी सभी गतिविधियों को तीन अलग–अलग इकाइयों के माध्यम से करता है। अकादमिक संदर्भ इकाई उनमें से एक है। इस इकाई ने लगभग 25 साल पहले अपनी यात्रा शुरू की थी और इन वर्षों में प्रारंभिक शिक्षा के सिद्धांत और कार्य के क्षेत्र में योगदान करते हुए अपना एक स्थान बनाया। आज यह इकाई मुख्य रूप से प्राथमिक शिक्षकों, शिक्षा कर्मियों और शिक्षा अधिकारियों के पेशेवर विकास के क्षेत्र में काम करती है।

अकादमिक संदर्भ इकाई की प्रमुख गतिविधियां निम्न हैं :

- ✓ स्कूली शिक्षा से संबंधित अकादमिक और शोध गतिविधियों को शुरू करना।
- ✓ दिगन्तर की विभिन्न परियोजनाओं के साथ–साथ प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य संगठनों के लिए निरंतर आवश्यक शैक्षणिक सहायता प्रदान करना।
- ✓ शिक्षक विकास संवर्धन के लिए कई तरह की गतिविधियाँ, शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे पेशेवर कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, शोध और मूल्यांकन हेतु अध्ययन, शिक्षण–अधिगम सामग्री का विकास, और शिक्षण शास्त्रीय नवाचार में भागीदारी करना।

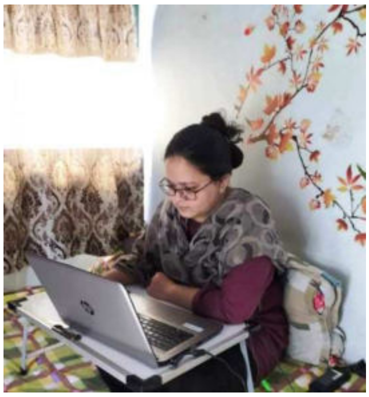

6.1 अकादमिक गतिविधियाँ

वित्तीय वर्ष 2020–21 के दौरान इस इकाई की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

एड इंडिया फाउंडेशन द्वारा विकसित पोस्ट–कोविड पैकेज में सहयोग

एड इंडिया फाउंडेशन ने अकादमिक संदर्भ इकाई (दिगन्तर) के साथ मिलकर एक ऑनलाइन पोस्ट–कोविड पैकेज विकसित किया, जिसका उद्देश्य लंबे लॉकडाउन के बाद स्कूल खुलने पर पहले 15 दिनों के दौरान शिक्षकों और शुरुआती कक्षाओं के छात्रों की मदद करना था। इस पैकेज का उद्देश्य शिक्षकों को बच्चों में सीखने की कठिनाइयों को समझने और इनके निदान ढूँढने में मदद करना था। यह पैकेज पाठ्यक्रम में उचित संशोधन पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्राथमिक कक्षाओं के निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रमुख अवधारणाओं और कौशल पर छात्रों के साथ काम करने के कुछ तौर तरीकों को प्रस्तुत करता है ताकि लॉकडाउन की वजह से बच्चों के सीखने के नुकसान की भरपाई की जा सके।

इस पैकेज ने लॉकडाउन के दौरान कोविड से हो रही मौतों, भूख और अचानक माता–पिता के विस्थापन के दर्दनाक अनुभवों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों और स्कूल से पूरी तरह कट जाने के वजह से उनके सीखने में हुए नुकसान को गंभीरता से समझे जाने और इसके प्रति संवेदनशील होकर सोचे जाने की जरूरत को रेखांकित किया है।

यह पैकेज तीन विषयों पर केंद्रित है: i) हिंदी, ii) अंग्रेजी और iii) गणित। प्रत्येक विषय के दो महत्वपूर्ण घटक थे– शिक्षक मार्गदर्शिका और गतिविधि पुस्तिका। इसलिए, पूरे पैकेज में निम्नलिखित सामग्री है :

i) हिन्दी भाषा :

सेट–1

अ) शिक्षक मार्गदर्शिका : कक्षा 2 और 3 (संयुक्त)

ब) गतिविधि पुस्तिका : कक्षा 2 और 2 (संयुक्त)

सेट–2

स) शिक्षक मार्गदर्शिका : कक्षा 4 और 5 (संयुक्त)

द) गतिविधि पुस्तिका : कक्षा 4 और 5 (संयुक्त)

ii) अंग्रेजी भाषा :

सेट–1

अ) शिक्षक मार्गदर्शिका : कक्षा 2 और 3 (संयुक्त)

ब) गतिविधि पुस्तिका : कक्षा 2 और 3 (संयुक्त)

सेट–2

स) शिक्षक मार्गदर्शिका : कक्षा 4 और 5 (संयुक्त)

द) गतिविधि पुस्तिका : कक्षा 4 और 5 (संयुक्त)

iii) गणित शिक्षण :

सेट–1

अ) शिक्षक मार्गदर्शिका : कक्षा 2 और 3 (संयुक्त)

ब) गतिविधि पुस्तिका : कक्षा 2 और 3 (संयुक्त)

सेट–2

स) शिक्षक मार्गदर्शिका : कक्षा 4 और 5 (संयुक्त)

द) गतिविधि पुस्तिका : कक्षा 4 और 5 (संयुक्त)

प्रत्येक विषय में, शिक्षक मार्गदर्शिका एक ऐसा दस्तावेज है जो कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर शिक्षकों को मदद करता है, जैसे, कक्षा 2, 3, 4 और 5 के लिए वे कौनसी अवधारणाएँ और कौशल हैं जिन पर छात्रों की पहले से समझ हो; वर्तमान कक्षा में किन अवधारणाओं और कौशलों को पढ़ाया जाना चाहिए; और विषय

का प्रकृति और उसके शिक्षणशास्त्र के बीच सम्बन्ध, आदि। इसके अलावा, गतिविधि पुस्तिका मार्गदर्शिका का एक विस्तार है जिसमें शिक्षक कक्षा में पहले 15 दिनों के दौरान की जाने वाली गतिविधियों के बारे में जान सकते हैं। इन पुस्तिकाओं की सभी गतिविधियों को शिक्षकों और छात्रों की मदद के लिए इस तरह डिजाइन किया गया है कि वे पहले से सीखी अवधारणाओं और कौशलों पर आधारित हों और उन अवधारणाओं और कौशलों को सीखने में मदद करें जिन्हें वर्तमान कक्षा में सीखा जाना चाहिए।

अकादमिक संदर्भ इकाई ने 2020–21 की पहली तिमाही (अप्रैल से जून) के दौरान इस परियोजना में योगदान दिया और हिंदी और गणित की शिक्षक मार्गदर्शिका और गतिविधि पुस्तिकाएं विकसित की।

फाउंडेशंस ऑफ एजुकेशन कोर्स (अंग्रेजी)

मार्च 2020 की शुरुआत में अकादमिक संदर्भ इकाई ने फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन कोर्स (इसे आगे फाउंडेशन कोर्स कहा जा रहा है) की घोषणा की, जो कि अप्रैल से शुरू होकर सितंबर, 2020 में समाप्त होने वाला था। कोर्स के दो अलग–अलग संस्करणों की घोषणा की गई– एक हिंदी और दूसरा अंग्रेजी माध्यम में। हालांकि, मार्च 2020 के अंत तक कोविड–19 महामारी के प्रकोप के चलते अनिश्चितता के मद्देनजर अकादमिक संदर्भ इकाई टीम को अपनी योजनाओं पर फिर से विचार करना पड़ा और उसके अनुसार कई बदलावों को समायोजित करना पड़ा। नतीजतन, अकादमिक संदर्भ इकाई ने फाउंडेशन कोर्स को एक ऑनलाइन कोर्स के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया।

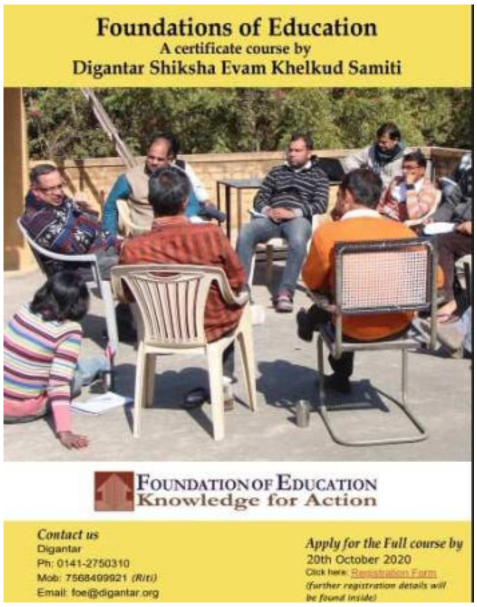

दूसरी तिमाही (जुलाई–सितंबर, 2020) के दौरान अकादमिक संदर्भ इकाई ने फाउंडेशन कोर्स का ऑनलाइन संस्करण विकसित करने में अपना समय लगाया। ऑनलाइन संस्करण को नवंबर 2020 से शुरू करने की योजना थी। यह महसूस किया गया कि ऑनलाइन मोड की अपनी विशिष्टताएं और आवश्यकताएं होती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम के विभिन्न मॉड्यूल्स की शिक्षण–अधिगम सामग्री (टीएलएम) को इसके अनुसार बदलना पड़ा। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन मॉड्यूल्स में दोनों प्रकार के तत्वों– ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों को शामिल किया गया। कुल 5 ऑनलाइन सत्रों (कुल समय 6 घंटे) और 9 घंटे स्वाध्याय और असाइनमेंट कार्य करने के लिए हर मॉड्यूल में रखे गए। इसी के अनुसार, प्रत्येक मॉड्यूल्स के टीएलएम को पुनर्गठित और संशोधित किया गया ताकि इसे ऑनलाइन सत्रों में और बाद में प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सके। इसके अलावा, नए हैंड–आउट विकसित किये गए, ऐसी पठन सामग्री विकसित की गयी जिसमें बीच–बीच में लिखी बातों की व्याख्या की गयी हो ताकि यह सामग्री एक सेल्फ–लर्निंग सामग्री की तरह इस्तेमाल की जा सके। शिक्षण–अधिगम सामग्री में अनेकों तरह की सामग्री जैसे लेख, पुस्तकों और लेखों के उपयोगी और सरल हिस्सों पर आधारित हैण्ड–आउट, वीडियो की छोटी क्लिपिंग, गतिविधियाँ आदि शामिल किये गए। सभी मॉड्यूल्स के असाइनमेंटस् विकसित किये गए।

हर मॉड्यूल के ऑनलाइन सत्रों और ऑफलाइन गतिविधियों को विकसित करने के वक्त फेस–टू–फेस मॉड्यूल्स की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाओं को ही केंद्र में रखा गया और इनकी कल्पना की गयी। अवधारणाओं की प्रासंगिकता और महत्व शैक्षिक सिद्धांत और कर्म में उनके स्थान के आधार पर निर्धारित किया गया। फाउंडेशन कोर्स के ऑनलाइन संस्करण के विकास की इस पूरी प्रक्रिया में निम्नलिखित प्रमुख कार्य शामिल थे जिन्हें अकादमिक संदर्भ इकाई टीम द्वारा किया गया :

- मॉड्यूल्स के पाठ्यक्रमों की रूपरेखा विकसित करना, इनके अवधारणा–पत्र तैयार करना।
- पाठ्यक्रमों के आधार पर हर मॉड्यूल की सामग्री बनाना और टीम के फीडबैक लेना।
- पाठ्यक्रम की संरचना, प्रतिभागियों से जुड़ने के तरीके प्रतिभागियों के लिए सहायता आदि मुद्दों पर टीम में निरंतर विचार–विमर्श।
- एक ऑनलाइन पोर्टल खोजना या बनाना जहाँ ऑनलाइन कोर्स को संचालित किया जा सके। पहले मूडल (MOODLE) को बेहतर विकल्प के रूप में खोजा गया और टीम के सभी लोगों ने उसे समझने की कोशिश की।
- ऑनलाइन कोर्स के बारे में प्रचार–प्रसार किया गया।

ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स : कोर मॉड्यूल्स

वर्ष की तीसरी तिहाई (अक्टूबर–दिसम्बर) के दौरान, फाउंडेशन कोर्स को ऑनलाइन मोड में शुरू किया गया। अक्टूबर में विप्रो फाउंडेशन ने अकादमिक संदर्भ इकाई को एक ऑनलाइन पोर्टल मुहैया करवा कर इसकी सहायता की, जहां कोर्स सम्बंधित सामग्री को अपलोड किया गया। ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स के सभी 8 कोर मॉड्यूल्स 1 नवम्बर, 2020 से लेकर 4 फरवरी, 2021 तक आयोजित किये गए। सभी संभागियों से गूगल फॉर्म के जरिये नियमित फीडबैक लिए गए। सम्भागियों को उनके असाइनमेंट करने और अकादमिक मुद्दों को समझने में किसी प्रकार की कठिनाई आने की स्तिथि में सत्रों के बाद भी सहायता की गई।

नीचे की तालिका में ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स से जुड़ी कुछ जरूरी जानकारी दी गयी है :

ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स 2020–21				
क्र.सं.	मॉड्यूल	तारीख	संदर्भ व्यक्ति	संभागियों की संख्या
1.	शिक्षा – एक परिचय	1–6 नवम्बर 2020	रोहित धनकर	39
2.	शिक्षा–दर्शन	8–14 नवम्बर 2020	रोहित धनकर	37
3.	शिक्षा का समाजशास्त्र	22–28 नवम्बर 2020	रिद्धिमा गर्ग	39
4.	सीखने के परिप्रेक्ष्य	29 नवम्बर–5 दिसम्बर 2020	रोहित धनकर	37

5.	मानवीय समझ और शिक्षाक्रम	13—26 दिसम्बर 2020	रोहित धनकर	38
6.	शिक्षणशास्त्र और मूल्यांकन	3—9 जनवरी 2021	प्रकाश अय्यर	40
7.	अध्यापक शिक्षा	17—27 जनवरी2021	वरदराजन नारयणन	37
8	शिक्षा में क्रियात्मक शोध	31 जनवरी— 8 फरवरी 2021	राहुल मुखोपाध्याय	38

ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स : शिक्षणशास्त्र मॉड्यूल्स

कोर मॉड्यूल्स के साथ ही शिक्षणशास्त्र मॉड्यूल्स की तैयारी भी शुरू हो गयी थी। प्रत्येक मॉड्यूल के लिए शुरुआत में अवधारणा—पत्र लिखे गए। शुरुआत में प्राथमिक और उच्च—प्राथमिक प्राथमिक सैक्शन के लिए 10 शिक्षणशास्त्र मॉड्यूल शुरू करने का निर्णय लिया गया था। हालांकि, बाद में संभागियों के फीडबैक और उनकी रुचि को देखते हुए केवल प्राथमिक कक्षाओं के लिए 4 मॉड्यूल ही शुरू किये गए जैसे— हिंदी भाषा शिक्षण, अंग्रेजी भाषा शिक्षण, गणित शिक्षण और पर्यावरण अध्ययन शिक्षण। बाद में कुछ अपरिहार्य कारणों के चलते इन मॉड्यूल्स को अगले सत्र में करने का निर्णय लिया गया।

ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स (हिंदी)

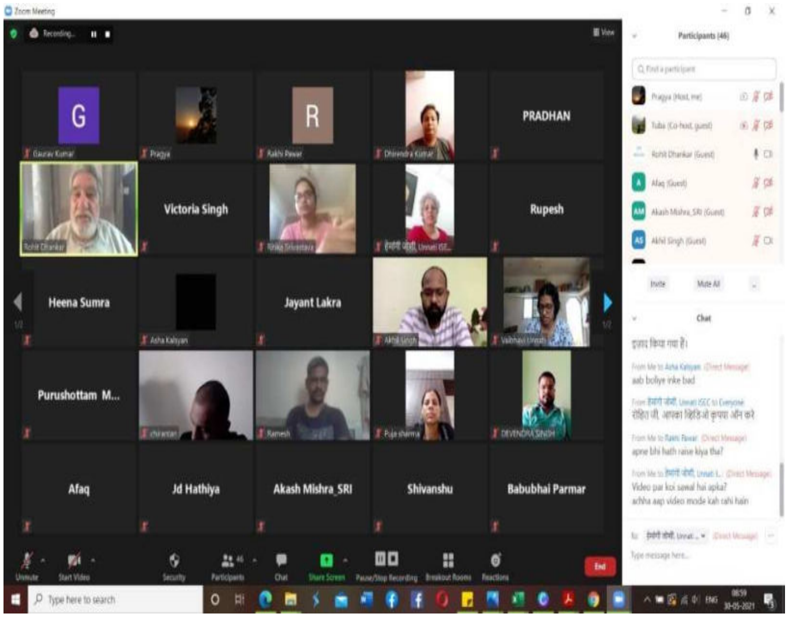

दिसम्बर के बीच में अकादमिक संदर्भ इकाई द्वारा ऑनलाइन फाउंडेशन कोर्स को हिंदी माध्यम में भी आयोजित करने के बारे में सोचा गया। इसके चलते, हिंदी माध्यम कोर्स का ब्रॉशर और सभी 8 कोर मॉड्यूल्स के अवधारणा—पत्र हिंदी में तैयार किये गए। मार्च 2021 के अंत तक, चार कोर मॉड्यूल्स (शिक्षा— एक परिचय, शिक्षा—दर्शन, शिक्षणशास्त्र और मूल्यांकन और अध्यापक शिक्षा) की पठन—सामग्री को हिंदी में अनुदित कर लिया गया था।

आगामी वर्ष की योजना

मार्च 2020 के अंत में अकादमिक संदर्भ इकाई की वार्षिक योजना 2021–22 तैयार की गयी और विप्रो फाउंडेशन के साथ साझा की गयी। वार्षिक योजना 2021–22 तैयार करने के उद्देश्य से अकादमिक संदर्भ इकाई के सदस्यों द्वारा कई ऑनलाइन मीटिंग की गयी। अगले वर्ष, फाउंडेशन कोर्स (हिंदी और अंग्रेजी माध्यम) के अलावा, दो नए कोर्स ('थिंकिंग अबाउट एजुकेशन' और 'बेडरॉक सीरीज') प्रस्तावित किये गए।

अकादमिक संदर्भ इकाई की पिछले 15 वर्षों में मुख्य गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ

- टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई और अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर आरम्भिक शिक्षा में एम.ए. कार्यक्रम को विकसित करने और चलाने में योगदान।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 को विकसित किये जाने और बाद में एन.सी.आर.टी. पाठ्य–पुस्तकों को लिखे जाने की प्रक्रिया में भागीदारी।
- शिक्षाक्रम सुधार और डी.एड. और डी.एल.एड. कार्यक्रमों की पठन–सामग्री के विकास जैसे विभिन्न प्रयासों में एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़ के साथ भागीदारी।
- दिगन्तर के विभिन्न कार्यक्रमों (शिक्षा समर्थक परियोजना, फागी; क्वालिटी एजुकेशन प्रोग्राम, बारां; संदर्भ शाला कार्यक्रम, किशनगढ़; अर्ली लिटरेसी रिसर्च प्रोग्राम, जयपुर और टीचर एम्पावरमेंट प्रोग्राम, फागी) को विकसित करने और उनके लिए अकादमिक सहयोग सहयोग करने में योगदान।
- 'अध्यापक ज्ञान' पर अध्यापक–शिक्षकों की मान्यताओं और विश्वासों को अध्ययन करने के उद्देश्य से भारत के 11 हिंदी भाषी राज्यों में एक वृहद् शोध कार्य।
- पिछले 15 वर्षों से हर साल 'शिक्षा की बुनियादी समझ' कोर्स को आयोजित करना।
- अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और अन्य संस्थाओं की मांग पर शैक्षिक परिप्रेक्ष्य निर्माण पर विभिन्न कार्यशालाएं विकसित करना और आयोजित करना।
- समकालीन शैक्षिक मुद्दों पर प्रकाशन।

❑❑❑

सूना हुआ स्कूल

प्राची, आठवी, दिगन्तर स्कूल, भावगढ़, राजस्थान

कोरोना के चलते जब हुआ लॉकडाउन फुल
सूने हुए गली-चौबारे, सूना हुआ स्कूल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

दरवाज़ों पे ताले जड़े हैं, सारे बच्चे घर में पड़े हैं
तरस गए हैं आने को हम, अपने ही स्कूल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

सारे समूह अब खाली होंगे, दीवारों पे जाले होंगे
खोलो कमरा झाड़ू लगा दें, सब कमरे जाएँ धुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

कम्प्यूटर की याद है आती, आर्ट क्लास जो हमको भाती
हर वो पल जो हमने वहाँ बिताए, कैसे जाएँ उनको भूल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

बड़े-छोटे का भेद नहीं था, ना जात-पात से मतलब था
परिवार के जैसे शिक्षक हमारे, गए थे हमसे घुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

पेड़ों पे बेर ही बेर लगे हैं, मैदानों में झूले डले हैं
सब कुछ है मौजूद, मगर बच्चे सारे गुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

संकट ये कैसा आया कि विद्यालय से दूर हुए
दुआ यही करते हैं कि सब फिर से जाए खुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

(बाल पत्रिका 'चकमक' के जून, 2021 अंक में प्रकाशित)